Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 6

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

11 जमादी सानी 1441 हिजरी कमरी 6 सुलह 1399 हिजरी शमसी 6 फरवरी 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

याद रखो कि जब उम्मत को उमत मरहूमा क़रार दिया है और उलूम लदनीह (ईशवरीय ज्ञान) से उसे सरफ़राज़ी बख़शी है तो व्यवहारिक रूप से शुक्र वाजिब है।

याद रखो कि अख़लाक़ इन्सान के सालिह होने की निशानी हैं। आम तौर पर हदीस शरीफ़ में मुसलमान की यही तारीफ़ आई है कि मुसलमान वही है जिसके हाथ और ज़बान से मुसलमान सलामत रहें।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

इस्लाम के मानने वालों को रूहानी उलूम से सदृशयता है

इस से बड़ी बशारत मिलती है। जैसे हमारे विरोधियों को सांसारिक उलूम से सदृश्यता है ऐसे ही इस्लाम के मानने वालों को रूहानी उलूम से। एक गँवार मुस्लमान की सच्ची रोया और ख़्वाबें बड़े बड़े फिलासफरों , बिशपों और पंडितों के ख़्वाबों से ताक़त में बढ़कर हैं ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ (अल्जुम्अ: 5)अत: मुसलमानों पर अनिवार्य है कि उस मुहसिन का शुक्र अदा करें لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ (सूर: इब्राहीम) अर्थात अगर तुम मेरा शुक्र करोगे तो में अपनी दी हुई नेअमत को ज़्यादा करूँगा और इन्कार की अवस्था में मेरा अज़ाब सख़्त है। याद रखो कि जब उम्मत को उमत मरहूमा क़रार दिया है और उलूम लदनीह (ईशवरीय ज्ञान) से उसे सरफ़राज़ी बख़शी है तो व्यवहारिक रूप से शुक्र वाजिब है। अत: اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ में समस्त मुस्लमानों को लाज़िम है कि اِيَّاكَ نَعْبُدُ का लिहाज़ रखें क्योंकि اِيَّاكَ نَعْبُدُ को اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ पर मुक़द्दम रखा है। अत: पहले व्यावहारिक तौर पर शुक्रिया करना चाहिए और यही मतलब اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ में रखा है। अर्थात दुआ से पहले अस्बाब ज़ाहिरी की रियाइत और ध्यान ज़रूरी तौर पर की जाए। और फिर दुआ की तरफ़ ध्यान हो। पहले अक़ाइद , अख़लाक़ और आदात का सुधार हो। फिर اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ

अख़लाक़ इन्सान के सालिह होने की निशानी हैं।

अब मैं एक और ज़रूरी और बहुत ज़रूरी बात वर्णन करनी चाहता हूँ। हमारी जमाअत को चाहिए कि लापरवाही और अज्ञानता से ना सुने। याद रखो कि अख़लाक़ इन्सान के सालिह होने की निशानी हैं। आम तौर पर हदीस शरीफ़ में मुसलमान की यही तारीफ़ आई है कि मुसलमान वही है जिसके हाथ और ज़बान से मुसलमान सलामत रहें।

(यहां तक हुज़ूर ने तक़रीर फ़रमाई थी कि नमाज़ अस्र का वक़्त हो गया। अत: आपने और समस्त हाज़िर लोगों ने निहायत ख़ुलूस और सच्चे जोश से नमाज़ अस्र अदा की और फिर सब के सब ध्यानपूर्वक हो कर मर्दे ख़ुदा की बातें सुनने लगे और आप ने तक़रीर को फिर शुरू की। ऐडीटर)

मैंने इस ज़िक्र को छोड़ा था कि اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ की दुआ तालीम करने में अल्लाह तआला ने चाहा है कि इन्सान तीन पहलू ज़रूर समक्ष रखे। अव्वल: अख़लाक़ी हालत। दूसरी: हालत अक़ाइद। तीसरे:आमाल की हालत। सामूहिक तौर पर यूं कहो कि इन्सान ख़ुदा तआला द्वारा दी गई कुव्वतों के द्वारा अपनी आवस्था का सुधार करे और फिर अल्लाह तआला से मांगे। यह मतलब नहीं कि सुधार की अवस्था में दुआ ना करे। नहीं उस वक़्त भी मांगता रहे। اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ में फ़ासिला नहीं है अलबत्ता اِيَّاكَ نَعْبُدُ में ज़माना को प्राथिमकता है क्योंकि जिस हालत में अपनी रहमानियत से हमारी दुआ और निवेदन के बिना हमें इन्सान बनाया और विभिन्न प्रकार की क़ुव्वतें और नेअमतें प्रदान फ़रमाएं। इस वक़्त हमारी दुआ ना थी उस वक़्त ख़ुदा का फ़ज़ल था और यही तक़द्दुम (प्राथमिकता) है।

रहमानियत और रहीमीत

यह याद रहे कि रहम दो किस्म का होता है। एक रहमानियत और दूसरा रहीमीत के नाम से जाना जाता है। रहमानियत तो ऐसा फ़ैज़ है कि जो हमारे वजूद और हस्ती से भी पहले ही शुरू हुआ। जैसे अल्लाह तआला ने पहले-पहल अपने स्थायी इलम से देखकर इस किस्म का ज़मीन आसमान और आकाशीय और सांसारिक वस्तुएं ऐसी पैदा की हैं जो सब हमारे काम आने वाली हैं और काम आती हैं और उन सब वस्तुओं से इन्सान ही आम तौर पर लाभ उठाता है। भेड़ बकरी और अन्य चौपाय जबकि ख़ुद इन्सान के लिए लाभदायक चीज़ हैं तो वे क्या लाभ उठाते हैं? देखो जिस्मानी मामलों में इन्सान कैसी कैसी नर्म और उच्च स्तर के खाने खाता है। अच्छे दर्जा का गोश्त इन्सान के लिए है। टुकड़े और हड्डियां कुत्तों के लिए। जिस्मानी तौर पर जो आन्नद और लज़्ज़तें इन्सान को हासिल हैं यद्यपि हैवान भी इस में सामिल हैं मगर इन्सान को वह दर्जा में उच्च हासिल हैं और रुहानी लज़्ज़तों में जानवर शामिल भी नहीं हैं। अत: यह दो किस्म की रहमतें हैं। एक वह जो हमारे वजूद से पहले समय से पहले तक़द्दुमा की सूरत में विभिन्न वस्तुएं पैदा कीं जो हमारे काम में लगी हुई हैं और ये हमारे वजूद , इच्छा और दुआ से पहले हैं। जो रहमानियत की मांग से पैदा हुई।

और दूसरी रहमत रहीमीत की है। अर्थात जब हम दुआ करते हैं तो अल्लाह तआला देता है। ग़ौर किया जाए तो मालूम होगा कि क़ानून क़ुदरत का सम्बन्ध हमेशा से दुआ का सम्बन्ध है। कुछ लोग आजकल उस को बिद्अत समझते हैं। हमारी दुआ का जो सम्बन्ध ख़ुदा तआला से है। मैं चाहता हूँ कि उसे भी वर्णन करूँ।

एक बच्चा जब भूख से बेताब हो कर दूध के लिए चिल्लात और चीख़ता है तो माँ के स्तन में दूध जोश मार कर आ जाता है। बच्चा दुआ का नाम भी नहीं जानता लेकिन इस की चीख़ें दूध को क्योंकर खींच कर लाती हैं? इस का हर एक को तजुर्बा है कई बार देखा गया है कि माएं दूध को महसूस भी नहीं करतीं। मगर बच्चा की चिल्लाहट है कि दूध को खींचे लाती है। तो क्या हमारी चीख़ें जब अल्लाह तआला के हुज़ूर हों तो वे कुछ भी नहीं खींच कर ला सकतीं? आता है और सब कुछ आता है मगर आँखों के अंधे जो फ़ाज़िल और फिलासफर बने बैठे हैं वे देख नहीं सकते। बच्चा को जो तुलना माँ से है इस सम्बन्ध और रिश्ता को इन्सान अपने ज़ेहन में रखकर अगर दुआ की फ़िलासफ़ी पर ग़ौर करे तो वह बहुत आसान और सरल मालूम होती है। दूसरी किस्म का रहम यह शिक्षा देता है कि एक रहम मांगने के बाद पैदा होता है। मांगते जाओगे मिलता जाएगा اُدْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ (अलमोमिन:61) कोई लफ़्फ़ाज़ी नहीं बल्कि यह इन्सानी फितरत की एक अनिवार्य बात है।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 99 से 101)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, जुलाई 2019 ई (भाग-1)

इस्लामाबाद(बर्तानिया)से रवाना होने और बैयतुस्सुबूह (फ्रैंकफ़र्ट ,जर्मनी में तशरीफ लाना * फ़ैमिली तथा व्यक्तिगत मुलाक़ातें, पाकिस्तान से जर्मनी हिजरत करने वाले जमाअत के लोगों की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात * मुलाक़ात के बाद जमाअत के लोगों के ईमान वर्धक प्रतिक्रियाएं, आमीन का आयोजन

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

2 जुलाई 2019(दिनांक मंगलवार)

इस्लामाबाद से रवाना होने फ्रैंकफ़र्ट पधारना

आज का यह दिन इस लिहाज़ से एक तारीख़ी महत्व का दिन है कि जमाअत अहमदिया के नए मर्कज़ "इस्लामाबाद" (यू.के से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का किसी भी देश का यह पहला दौरा था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ जर्मनी के सफ़र पर रवाना होने के लिए प्रोग्राम के अनुसार सुबह 10 बजे अपनी रिहायश गाह से बाहर पधारे। हुज़ूर अनवर को अल-विदा कहने के लिए सुबह से ही जमाअत के लोगों मर्द तथा औरतें, रिहायशी हिस्सा के बाहरी सेहन में जमा थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ दया करते हुए कुछ देर के लिए लोगों के बीच पधारे। हर एक व्यक्ति अपने प्यारे आक़ा के दर्शन से लाभान्वित हुआ। हुज़ूर अनवर ने अपना हाथ बुलंद करके सब हाज़िरीन को अस्सलामो अलैकुम कहा और सामूहिक दुआ करवाई। इस के बाद पाँच गाड़ियों पर आधारित क़ाफ़िला बर्तानिया के एक तटीय शहर Dover की तरफ़ रवाना हुआ Dover बर्तानिया की एक प्रसिद्ध बंदरगाह है। लंदन और इस के इर्दगिर्द के इलाक़ों और शहरों में आबाद लोग यूरोप का सफ़र Ferries के द्वारा इसी बंदरगाह से करते हैं। Dover शहर से ग्यारह मील पहले Folkestone के इलाक़ा में वह प्रसिद्ध Channel Tunnel है जो बर्तानिया और फ्रांस के तटीय इलाक़ों को आपस में मिलाती है। इस Tunnel (सुरंग के द्वारा कारें और अन्य बड़ी गाड़ियां मुसाफ़िरों तथा ट्रेन फ्रांस के तटीय शहर Calais तक पहुँचती हैं। आज का सफ़र भी इसी Channel Tunnel के द्वारा था

इस्लामाबाद (यू.के से आदरणीय मन्सूर शाह साहिब (नायब अमीर यू.के), आदरणीय प्रदानउल-मुजीब राशिद साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज यू.के, आदरणीय एजाज़ुर्रहमान साहिब सौर मजलिस अंसारुल्लाह यू.के, आदरणीय मुबारक अहमद ज़फ़र साहिब ऐडीशनल वकीलुल माल लंदन, आदरणीय नासिर इनाम साहिब प्रिंसिपल जामिया अहमदिया यू.के, आदरणीय आचरण अहमद अंजुम साहिब वकालत तबशीर और आदरणीय सौर साहिब मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया यू के अपनी ख़ुद्दाम की सैक्योरिटी टीम के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ को अलविदा कहने के लिए चैनल टनल तक क़ाफ़िला के साथ आए थे। लगभग 1 घंटा 40 मिनट के सफ़र के बाद चैनल टनल आई। इस्लामाबाद से साथ आने वाले लोगों ने अपने प्यारे आक़ा को अलविदा कहा।

इस के बाद इमीग्रेशन और अन्य सफ़र के मामलों की पूर्णता के बाद कुछ वक़्त के लिए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला एक स्पैशल लाऊंज में तशरीफ़ ले आए। लगभग 12 बजकर 35 मिनट पर क़ाफ़िला की गाड़ियां ट्रेन पर बोर्ड की गईं। ट्रेन 12 बजकर 50 मिनट पर 140 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ़्तार से फ्रांस के तटीय शहर Calais के लिए रवाना हुई। इस सुरंग की कुल लंबाई 31 मील है और इस में से 24 मील का हिस्सा समुंद्र की स्तह के नीचे है। इस सुरंग का गहरा हिस्सा समुंद्र की स्तह से 75 मीटर अर्थात 250 फुट नीचे है। अब तक किसी समुंद्र के नीचे बनने वाली सुरंग में से यह दुनिया की सबसे बड़ी सुरंग है

लगभग आधा घंटा के सफ़र के बाद फ्रांस के स्थानीय वक़्त के अनुसार2 बजकर 20 मिनट पर ट्रेन फ्रांस के तटीय शहरCalais पहुंची (फ्रांस का वक़्त बर्तानिया के वक़्त से एक घंटा आगे है) ट्रेन रुकने के लगभग पाँच मिनट बाद गाड़ियां ट्रेन से बाहर आएं और मोटर वे पर सफ़र शुरू हुआ।

पहले से तय हुए प्रोग्राम के अनुसार यहां से कुछ किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक पैट्रोल पंप के पार्किंग एरिया में जमाअत फ्रांस से आए हुए वफ़द ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का स्वागत करना था। फ्रांस से आदरणीय इशफ़ाक़ रब्बानी साहिब अमीर जमाअत फ्रांस, आदरणीय मुहम्मद असलम दूबोरी साहिब नायब अमीर फ्रांस, आदरणीय नसीर अहमद शाहिद साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज फ्रांस, आदरणीय फ़हीम अहमद नयाज़ साहिब नैशनल जनरल सैक्रेटरी, आदरणीय हसनैन शाह साहिब (नई बैअत करने वाले) और क़ायमक़ाम सौर ख़ुद्दामुल अहमदिया फ्रांस आदरणीय असौ वसीम साहिब अपने ख़ुदाम के साथ अपने प्यारे आक़ा को ख़ुश-आमदीद कहने के लिए आए थे।

जबकि जर्मनी से आदरणीय अब्दुल्लाह वागस हाऊज़र साहिब अमीर जमाअत जर्मनी, आदरणीय सौक़त अहमद साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज जर्मनी, आदरणीय जरी उल्लाह साहिब नायब जनरल सैक्रेटरी जर्मनी, आदरणीय यहया ज़ाहिद साहिब अस्सिटैंट जनरल सैक्रेटरी, आदरणीय डाक्टर अतहर ज़ुबैर साहिब, आदरणीय अब्दुल्लाह सपरा साहिब और आदरणीय अहमद कमाल साहिब सौर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया जर्मनी अपनी ख़ुद्दाम की सेक्योरिटी टीम के साथ अपने प्यारे आक़ा का स्वागत करने के लिए मौजूद थे। यहां पहुंचने के बाद बिना रुके सफ़र आगे जारी रहा।

प्रोग्राम के अनुसार कुछ किलोमीटर का सफ़र तय करने के बाद मोटरवे पर ही एक होटल Holiday Inn में नमाज़ ज़ुहर तथा प्रभाव की अदायगी और दोपहर के खाने का प्रबन्ध किया गया था। जमाअत फ्रांस ने इस का प्रबन्ध किया था

दोपहर 2 बजकर 40 मिनट पर यहां पधारे। जैसे ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ गाड़ी से बाहर पधारे तो आदरणीय अमीर साहिब फ्रांस इशफ़ाक़ रब्बानी साहिब, नायब अमीर फ्रांस असलम दूबोरी साहिब, मुबल्लिग़ इंचार्ज फ्रांस नसीर अहमद शाहिद साहिब, एक नई बैअत करने वाले दोस्त हसनैन शाह साहिब और आदरणीय सौर साहिब ख़ुद्दामुल अहमदिया ने अपने प्यारे आक़ा से हाथ मिलाया।

नमाज़ ज़ुहर तथा प्रभाव की अदायगी के लिए होटल के एक अलग हाल में प्रबन्ध किया गया था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने3 बजे तशरीफ़ लाकर नमाज़ ज़ुहर तथा प्रभाव जमा करके पढ़ाऐं। नमाज़ों की अदायगी और दोपहर के खाने के बाद यहां से आगे फ्रैंकफ़र्ट के लिए रवाना होने का प्रोग्राम था। रवाना होने से पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए कुछ देर के लिए अमीर साहिब फ्रांस से विभिन्न मामलों के बारे में बातचीत फ़रमाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने सामूहिक दुआ करवाई और 3 बजकर 50 मिनट पर फ्रैंकफ़र्ट (जर्मनी के लिए रवाना होने हुई और यहां Calais से 55 किलोमीटर का सफ़र तय करने के बाद फ्रांस का बॉर्डर पार करके देश बेल्जियम में दाख़िल हुए और रास्ता में आंच (Aachen) के स्थान पर लगभग साढ़े सात बजे बेल्जियम का बॉर्डर पार करके जर्मनी में दाख़िल हुए। पहले से तय प्रोग्राम के अनुसार आंच शहर में निवासी आदरणीय सिद्दीक़ अहमद डोगर साहिब के घर जाने का प्रोग्राम था। 7 बजकर 40 मिनट पर आदरणीय सिद्दीक़ अहमद डोगर साहिब के घर पधारे। आदरणीय सिद्दीक़ अहमद डोगर साहिब ने चाय और रीफ़रेशमंट का प्रबन्ध किया हुआ था

यहां कुछ देर क़ियाम के बाद 8 बजकर 25 मिनट पर फ्रैंकफ़र्ट के लिए रवाना होने हुई और आगे सफ़र जारी रहा। इस तरह Calais से फ्रैंकफ़र्ट तक सामूहिक तौर पर लगभग छः सौ किलोमीटर का सफ़र तय करने के बाद रात 10:30 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का जमाअत जर्मनी के मर्कज़ "बैयतुस्सुबूह" फ्रैंकफ़र्ट में पधारे।

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

मैंने नहीं देखा कि आप (स) ने किसी विशेष खाने का कभी हुक्म दिया हो और फिर वह आप (स) के लिए तैयार किया गया हो और न ही हमने कभी यह देखा कि आप (स) की सेवा में खाना पेश किया गया हो और आप (स) ने इस में कमी निकाली हो।

सदक़ा और ख़ैरात और ग़रीबों की मदद में खुला दिल रखने वाले बदरी सहाबी हज़रत सअद बिन उबअदा रज़ी अल्लाह अन्हो की मुबारका सीरत का वर्णन

जंग अबवा, जंग बदर तथा उहद और जंग हमराउल असद की घटनाओं का संक्षिप्त वर्णन।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 27 दिसम्बर 2019 ई. स्थान - मस्जिद 'बैयतुल फुतूह मोर्डन सिर्रे (यू. के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुत्बे में हज़रत सअद बिन उबादा का ज़िक्र हो रहा था। उनके बारे में आज कुछ और वर्णन करूँगा। हज़रत सअद बिन उबादा बैअत अक़बा सानिया के अवसर पर बनाए जाने वाले बारह नुक़बा में से एक थे।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 461 सअद बिन उबादा , दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत1990 ई)

उनके बारे में सीरत ख़ातमन्निबय्यीन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने यूं वर्णन किया है कि "क़बीला ख़ज़रज के ख़ानदान बनू साइयदा से थे और सारे क़बीला ख़ज़रज के रईस थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक ज़माना में मुमताज़ तरीन अन्सार में गिने जाते थे। यहां तक कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वस्ललम के देहान्त पर कुछ अन्सार ने इन्हीं को ख़िलाफ़त के लिए पेश किया था।' अर्थात अन्सार में से जो नाम पेश हुआ था वह उनका नाम था। "& हज़रत उमर रज़ि के ज़माना में फ़ौत हुए।'

(सीरत ख़ातमन्निबय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 230)

हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि, मुनिज़र बिन अमरो रज़ि और अबू दजानह रज़ि ,ये तीन आदमी थे उन्होंने जब इस्लाम क़बूल किया तो उन सबने अपने क़बीला बनू साइयदा के बुत तोड़ डाले।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 461सअद बिन उबादा , दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत1990 ई)

हिजरत मदीना के वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब बनू साइयदा के घरों के पास से गुज़रे तो हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि और हज़रत मुनिज़र बिन अमरो रज़ि और हज़रत अबू दजानह रज़ि ने निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह आप (स) हमारे पास तशरीफ़ लाएं । हमारे पास इज़्ज़त है। दौलत, क़ुव्वत और मज़बूती है। हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि ने यह भी निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह मेरी क़ौम में कोई ऐसा शख़्स नहीं जिसके ख़जूरों के बाग़ मुझसे ज़्यादा हों और इस के कुँएं मुझसे ज़्यादा हूँ। इस के साथ साथ दौलत, क़ुव्वत और बहुत एिधक संख्या भी हो। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे अबू साबित इस ऊंटनी का रास्ता छोड़ दो , ये मामूर है।(सुबुलुल हुदा वर्रिशाद भाग 3 पृष्ठ 272 अध्याय 6, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत1993 ई) यह अपनी इच्छा से कहीं जाएगी । हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि क़बीला बनू साइयदा के नक़ीब थे जैसा कि पहले भी वर्णन हुआ कि जो नक़ीब निर्धारित किए गए थे उनमें उनका भी नाम था।

कहा जाता है कि क़बीला औस और ख़ज़रज में ऐसा कोई घर ना था जिसमें चार शख़्स एक के बाद दूसरे फ़य्याज़ हूँ। बड़े खुले दिल के हूँ सिवाए दुलैम के, फिर उस के बेटे उबादा के, फिर उस के बेटे सअद के, फिर उस के बेटे क़ैस के। दुलैम और इस के गर वालों की सख़ावत के बारे में बहुत सी अच्छी अच्छी ख़बरें मशहूर थीं।

(असदुल ग़ाबह भाग 2 पृष्ठ 441सअद बिन उबादाह, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 2003 ई)

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना तशरीफ़ लाए तो सअद रज़ि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में रोज़ाना एक बड़ा पियाला भेजते जिसमें गोश्त और सरीद, गोश्त में पक्के हुए रोटी के टुकड़े या दूध का सरीद या सिरके और ज़ैतून का सरीद या चर्बी का पियाला भेजते और अधिकतर गोश्त का पियाला ही होता था। सअद का पियाला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ आप (स) की पत्नियों के घरों में चक्कर लगाया करता था।(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न भाग 3 पृष्ठ 461 सअद बिन उबादा , दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत1990 ई) आर्थात यह खाना था जो विभिन्न पत्नियों के लिए जाया करता था। कुछ रवायतें ऐसी भी हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर ऐसे दिन भी आते थे कि खाना नहीं होता था।

(सही अलबख़ारी किताबुल हिबह फ़ज़लुल हिबा हदीस 2567)

हो सकता है कि यह रोज़ाना नहीं प्राय भेजते हूँ या शुरू में भेजते हों और यह भी हो सकता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी सख़ावत की वजह से, ग़रीबों के ख़्याल की वजह से कई बार उन्हें गरीबों में बांट देते हों, मेहमानों को खुला देते हों इसलिए अपने घर में कुछ नहीं होता था

बहरहाल एक रिवायत और है, हज़रत ज़ैद बिन साबित वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि के यहाँ निवास फ़रमाया तो आप (स) के यहाँ कोई हदया नहीं आया। पहला हदया जो मैं आप (स) की सेवा में लेकर हाज़िर हुआ था वह एक पियाला था जिसमें गेहूं की रोटी की सरीद, गोश्त और दूध था। मैंने उसे आप (स) के सामने पेश किया। मैंने निवेदन की हे रसूलुल्लाह ई!यह पियाला मेरी माता ने आप (स) की सेवा में भेजा है। आप (स) ने फ़रमाया अल्लाह इस में बरकत डाले और आप (स) ने अपने सहाबा को बुलाया तो उन्होंने भी इस में से खाया। कहते हैं मैं अभी दरवाज़े तक ही पहुंचा था कि सअद बिन उबादह रज़ि भी एक पियाला लेकर हाज़िर हुए जिसे उनका ग़ुलाम अपने सर पर उठाए हुए था। वह काफ़ी बड़ा था। मैं हज़रत अबू अय्यूब रज़ि के दरवाज़े पर खड़ा हो गया। मैंने इस प्याले का कपड़ा उठायाता कि मैं उसे देखूं तो मैंने सरीद देखी जिसमें हड्डियां थीं। इस ग़ुलाम ने वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में पेश किया।

हज़रत ज़ैद रज़ि कहते हैं कि हम बनू मालिक बिन नज्जार के घरों में रहते थे। हम में से तीन या चार लोग हर रात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में बारी बारी खाना लेकर हाज़िर होते यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सात महीने हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी के घर में क़ियाम फ़रमाया। इन अय्याम में हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि और हज़रत सअद बिन ज़ुरारह रज़ि का पियाला हर-रोज़ आप (स) की सेवा में आता था और इस में कभी नाग़ा नहीं होता था। यहां कुछ स्पष्टता भी हो गई कि शुरू में रोज़ाना खाना आता था। सात महीने तक बाक़ायदा आता रहा। उस के बाद भी आता होगा लेकिन शायद इस बाक़ायदगी से नहीं। फिर कहते हैं कि इसी के बारे में जब हज़रत उम्मे अय्यूब रज़ि से पूछा गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप के यहाँ क़ियाम फ़रमाया था इसलिए आप बताएं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सबसे ज़्यादा पसंदीदा खाना कौन सा था? तो उन्होंने जवाब दिया कि मैंने नहीं देखा कि आप (स) ने किसी विशेष खाने का कभी हुक्म दिया हो और फिर वह आप (स) के लिए तैयार किया गया हो और न ही हमने कभी ये देखा कि आप (स) की सेवा में खाना पेश किया गया हो और आप (स) ने इस में बुराई निकाली हो। यह कहते हैं कि हज़रत अबू अय्यूब ने मुझे बताया कि एक रात हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि ने आँहज़रत

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में एक पियाला भिजवाया जिसमें तफ़ीशलथा। यह शोरबा की एक किस्म है। आप (स) ने वह पेट भर कर पिया और मैंने उस के इलावा आप (स) को कभी इस तरह पेट भर कर पीते नहीं देखा। फिर हम भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए यह बनाया करते थे। कभी यह नहीं कहा कि यह लाओ या वह पकाओ। कभी ऐब नहीं निकाला लेकिन जो खाना आता था इस में से यह खाना आप (स) को पसंद आया और आप (स) ने बड़े शौक़ से खाया या पिया। इस के बाद से फिर सहाबा को पता लग गया कि यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पसन्द है तो उस के अनुसार फिर बनाते थे। कहते हैं कि हम आपके लिए हरीस, मशहूर खाना है जो गेहूं और गोश्त से बनाया जाता है, यह भी बनाया करते थे जो आप (स) को पसन्द था और रात के खाने में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ पाँच से लेकर सौला तक लोग होते थे जिसकी गिनती खाने की कमी या अधिकता पर होती थी।

(सुबुलुल हुदा वर्रिशाद भाग 3 पृष्ठ 275 अध्याय 6 दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1993 ई)

(सुबुलुल हुदा वर्रिशाद भाग 3 पृष्ठ 279 अध्याय 6 दारुल कुतुब अल्इलिमया 1993 ई)

(लुग़ातुल हदीस भाग 4 पृष्ठ 572 प्रकाशन अली आसिफ़ प्रिंटर्ज़ लाहौर 2005 ई)

हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि के घर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़ियाम के दिनों का ज़िक्र करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने भी लिखा है। कहते हैं कि इस मकान में आप (स) ने सात माह तक या इब्न इसहाक़ की रिवायत के अनुसार और इब्न इसहाक़ की रिवायत यह है सफ़र महीना 2 हिज्री तक क़ियाम फ़रमाया था मानो जब तक मस्जिद नबवी और इस के साथ वाले कमरे तैयार नहीं हो गए आप (स) उसी जगह मुक़ीम रहे। अबू अय्यूब रज़ि आप (स) की सेवा में खाना भिजवाते थे और फिर जो खाना बच कर आता था वह हज़रत अबू अय्यबू रज़ि ख़ुद खाते थे। और मुहब्बत तथा इख़लास की वजह से इसी जगह उंगलियां डालते थे जहां से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खाया होता। दूसरे सहाबा भी प्राय आप (स) की सेवा में खाना भेजा करते थे। अत: उन लोगों में सअद बिन उबादह रज़ि रईस क़बीला ख़ज़रज का नाम तारीख़ में विशेष रूप से पर वर्णित है।

(उद्धिरत सीरत ख़ातमन्निबय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए, पृष्ठ 268)

हज़रत अन्स रज़ि से रिवायत है कि हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह!आप (स) हमारे घर तशरीफ़ कव लाएंगे तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सअद रज़ि के साथ उनके घर तशरीफ़ ले गए। हज़रत सअद रज़ि खजूर और तिल ले आए फिर आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए दूध का पियाला लाए जिसमें से आप (स) ने पिया

(सुबुलुल हुदा वर्रिशाद भाग 7 पृष्ठ 200 अध्याय 4, दारुल कुतुब अल्इलिमया 1993 ई)

क़ैस बन सअद रज़ि , सअद बिन उबादह रज़ि के बेटे हैं , वर्णन करते हैं कि रसू-लुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुलाक़ात के लिए हमारे घर तशरीफ़ लाए तो आप (स) ने फ़रमाया 'अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह । आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने घर वालों को सलाम किया। कैस रज़ि ने कहा कि मेरे पिता सअद रज़ि ने धीरे से जवाब दिया। कैस रज़ि ने कहा मैंने उनसे पूछा, अपने बाप से पूछा कि आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अन्दर आने का नहीं कहेंगे? हज़रत सअद रज़ि ने , बाप ने , बेटे को यह जवाब दिया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हम पर ज़्यादा सलाम कर लेने दो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फिर सलाम कर के वापस हुए। आर्थात आप ने कहा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सलाम किया। मैंने धीरे से जवाब दिया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दोबारा सलाम करेंगे तो इस तरह हमारे घर में सलामती पहुँचेगी। बहरहाल कहते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सलाम कर के वापस हुए तो फिर सअद रज़ि आप (स) के पीछे गए और निवेदन किया हे अल्लाह के रसूल ! मैं आप (स) के सलाम को सुनता और आप (स) को धीरे से जवाब देता ताकि आप (स) हम पर ज़्यादा सलाम भेजें। फिर आप (स) सअद रज़ि के साथ लौट आए। सअद रज़ि ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से नहाने का निवेदन किया। आप (स) ने नहाया । सअद रज़ि ने आप (स) को ज़ाफ़रान या वरस जो यमन के इलाक़े में पैदा होने वाला एक लाल रंग का पौधा है जिससे कपड़े रंगे जाते हैं इस से रंगा हुआ एक लिहाफ़ दिया। आप (स) ने उसे इर्द-गिर्द लपेट लिया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने हाथ उठा कर फ़रमाया। हे अल्लाह अपने दुरूद और अपनी रहमत सअद बिन उबादह रज़ि की औलाद पर नाज़िल कर।

(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफितस्सहाब: भाग 2 पृष्ठ 442- 441 सअद बिन उबादा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 2003 ई)

(उम्दतुल क़ारी शरह सही अल-बुख़ारी भाग 2 पृष्ठ 222 किताबुल इलम प्रका-शक दारुल फ़िक्र बेरूत)

यह रिवायत हज़रत अन्स रज़ि से इस तरह मर्वी है कि एक बार नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि के यहाँ अंदर आना चाहा ,घर में जाना चाहा और अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह कहा। हज़रत सअद रज़ि ने धीरे से कहा व अलैकुम अस्सलाम वरहमतुल्लाह जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सुनाई ना दिया यहां तक कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीन बार सलाम किया और सअद रज़ि ने तीनों बार इसी तरह जवाब दिया कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सुनाई ना दिया। अत: नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वापस तशरीफ़ ले गए। हज़रत सअद रज़ि आप (स) के पीछे गए और कहने लगे हे रसूलुल्लाह ! मेरे माँ बाप आप (स) पर क़ुर्बान। आप (स) ने जितनी बार भी सलाम कहा मैंने अपने कानों से सुना और इस का जवाब दिया लेकिन आप (स) को नहीं सुनाया। आप (स) को मेरी आवाज़ नहीं आई। मैं चाहता था कि आप (स) की सलामती और बरकत की दुआ बहुत अधिक हासिल करूँ। फिर वह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने घर ले गए और किशमिश पेश की। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे खाने के बाद फ़रमाया तुम्हारा खाना नेक लोग खाते रहें और तुम पर फिरशते रहमत की दुआएं करते रहें और रोज़ेदार तुम्हारे यहाँ इफ़तारी करते रहें। आप (स) ने उनको दुआ दी

(मस्नद अहमद बिन हनबल भाग 4 पृष्ठ 356-357 मस्नद अनस बिन मालिक हदीस12433 प्रकाशन आलेमुल कुतुब बेरूत1998 ई)

अल्लामा इब्न सीरीन वर्णन करते हैं कि सफ़्फा वाले जब शाम करते तो उनमें से कोई शख़्स किसी एक या दो को खाना खिलाने के लिए ले जाता हां हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि इसी सफ़्फा वालों को खाना खिलाने के लिए अपने साथ ले जाते।

(अलअसाबा फ़ी तमीईज़िस्साबा,भाग 3 पृष्ठ 56 सअद बिन उबादा,दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1995 ई)

अर्थात अक्सर यह होता था लेकिन ऐसी रवायतें भी हैं कि सफ़्फा वालों पर ऐसे दिन भी आए जब उनको भूखा भी रहना पड़ा। बहरहाल सहाबा प्राय उन गरीबों का ख़्याल रखा करते थे जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दरवाज़े पर बैठे होते थे और उनका सबसे ज़्यादा ख़्याल रखने वाले हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि थे।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना तशरीफ़ लाने के एक साल बाद सफ़र महीने में अब्वा, जो मदीना से मक्का की तरफ मुख्य मार्ग पर जुहफ़ा से 23 मील दूर स्थित है। यहां नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की माता हज़रत आमना की क़ब्र भी है, इस की तरफ़ कूच फ़रमाया। आप (स) का झंडा सफ़ैद रंग का था। इस अवसर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना में हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि को अपना जांनशीन या अमीर निर्धारित फ़रमाया।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 2 पृष्ठ 5 बाब ग़ज़वतुल अबवा ,दारुल कुतुब अल्इ-लिमया बेरूत1990 ई) (एटलस सीरत नबवी पृष्ठ 84 प्रकाशन दारुस्सलाम 1424 हिजरी)

जंग अबवा का दूसरा नाम जंग वद्दान वर्णन किया जाता है। सीरत ख़ातमन्निब-य्यीन में हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने जंग वद्दान का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया है। यह लिखते हैं कि

''आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का तरीक़ा था कि कभी तो ख़ुद सहाबा रज़ि को साथ लेकर निकलते थे और कभी किसी सहाबी की इमारत में कोई दस्ता रवाना फ़रमाते थे। तारीख़ लिखने वालों ने हर दो किस्म की मुहिमों को अलग अलग नाम दिए हैं। अत: जिस मुहिम में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुद शामिल हुए हूँ उस का नाम इतिहासकार ने ग़ज़वा रखते हैं और जिस में आप (स) ख़ुद शामिल ना हुए हूँ उस का नाम सिरया या बअस रखा जाता है मगर यह याद रखना चाहिए कि ग़ज़वा और सिरया दोनों में विशेष रूप से जिहाद बिस्सैफ के उद्देश्य से निकलना नहीं'' ज़रूरी नहीं है कि तलवार के जिहाद के लिए निकला जाए। ''बल्कि हर वह सफ़र जिसमें आप (स) जंग की हालत में शरीक हुए हों ग़ज़वा कहलाता है चाहे वह ख़ुसूसीयत के साथ लड़ने के उद्देश्य से ना किया गया हो और इसी तरह हर वह सफ़र जो आप (स) के हुक्म से किसी जमाअत ने किया हो इतिहासकारों की इस्तिलाह में सिरया या बअस कहलाता है चाहे उस का उद्देश्य

लड़ाई न हो लेकिन कुछ लोग ना वाक़फ़ीयत से हर ग़ज़वा और सिरया को लड़ाई की मुहिम समझने लग जाते हैं जो ठीक नहीं है।

यह वर्णन किया जा चुका है कि तलवार के साथ जिहाद की इजाज़त हिज्रत के दूसरे साल सफ़र महीने में नाज़िल हुई थी। यह पिछले ख़ुत्बों मैं पहले भी वर्णन हो चुका है। "चूँकि क़ुरैश के ख़ूनी इरादों और उन की ख़तरनाक कार्यवाईयों के मुक़ाबला में मुस्लमानों को महफ़ूज़ रखने के लिए शीघ्र कार्रवाई की ज़रूरत थी इसलिए आप (स) इसी महीने में मुहाजिरीन की एक जमाअत को साथ लेकर अल्लाह तआला का नाम लेते हुए मदीना से निकल खड़े हुए। रवानगी से पहले आप (स) ने अपने पीछे मदीना में सअद बिन उबादह रज़ि रईस ख़ज़रज को अमीर निर्धारित फ़रमाया और मदीना से दिक्षण पश्चिम की तरफ़ मक्का के रास्ता पर रवाना हो गए और अन्त में मुक़ाम वद्दान तक पहुंचे।' इस का यह विस्तार पहले भी वर्णन हो चुका है। "इस इलाक़ा में क़बीला बनू ज़मरा के लोग आबाद थे। यह क़बीला बनू कनाना की एक शाख़ था और इस तरह मानो यह लोग क़ुरैश के चचेरे भाई थे। यहां पहुंच कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़बीला बनू ज़मरा के रईस के साथ बातचीत की और आपस की रज़ामन्दी से आपस में एक मुआहिदा हो गया जिसकी शर्तें ये थीं कि बनू ज़मरह मुस्लमानों के साथ दोस्ताना सम्बन्ध रखेंगे और मुस्लमानों के ख़िलाफ़ किसी दुश्मन की मदद नहीं करेंगे और जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनको अर्थात बनू ज़मरह को "मुस्लमानों की मदद के लिए बुलाएँगे तो वे फ़ौरन आ जाऐंगे। दूसरी तरफ़ आप (स) ने मुस्लमानों की तरफ़ से यह वादा किया कि समस्त मुस्लमान क़बीला बनू ज़मरह के साथ दोस्ताना सम्बन्ध रखेंगे और ज़रूरत के समय उनकी मदद करेंगे। यह मुआहिदा बाक़ायदा लिखा गया और दोनों पक्षों के इस पर दस्तख़त हुए और 15 दिन की गैरहाज़िरी के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वापस तशरीफ़ ले आए। जंग वद्दान का दूसरा नाम जंग अब्वा है क्योंकि वद्दान के क़रीब ही अबवा की बस्ती भी है और यही वह स्थान है जहां आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की माता जी का देहान्त हुआ था। मुअर्रिख़ीन लिखते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़ब्वास जंग में बनू ज़मरह के साथ क़ुरैश मक्का का भी ख़्याल था। इस का मतलब यही है कि दरअसल आप (स) की यह मुहिम क़ुरैश की ख़तरनाक कार्यवाईयों की रोकथाम के लिए थी और इस में इस ज़हरीले और ख़तरनाक असर को दूर करना उद्देश्य था जो क़ुरैश के क़ाफ़िले इत्यादि मुस्लमानों के ख़िलाफ़ अरब के क़बीलों में पैदा कर रहे थे।" क़ुरैश मुस्लमानों के ख़िलाफ़ क़बीलों में जा कर प्रापेगंडा करते थे "और जिस की वजह से मुस्लमानों की अवस्था उन दिनों में बहुत नाज़ुक हो रही थी।

(सीरत ख़ातमन्निबय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 327-328)

हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि के जंग बदर में शामिल होने के बारे में दो राए वर्णन की जाती हैं। वाक़दी, मदायनी और इब्न कलबी के निकट यह जंग बदर में शामिल हुए थे। जबिक इब्न इसहाक़ और इब्न उक्ब: और इब्न सअद के निकट यह जंग बदर में शामिल नहीं हुए थे।

बहरहाल उस की एक वज़ाहत तबक़ातुत कुबरा की एक रिवायत के अनुसार इस तरह है कि हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि जंग बदर में हाज़िर नहीं हुए थे। वह रवानगी की तैयारी कर रहे थे और अन्सार के घरों में जा कर उन्हें रवानगी पर तैयार कर रहे थे कि रवानगी से पहले उन्हें कुत्ते ने काट लिया। इसलिए वह जंग बदर में शामिल ना हो सके। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यद्यपि सअद रज़ि शरीक ना हुए लेकिन इस के इच्छुक थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद रज़ि को जंग बदर के माल ग़नीमत में से हिस्सा प्रदान फ़रमाया था। हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि जंग उहद, ख़ंदक़ सिहत समस्त जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए

(अलइस्तेयाब भाग 2 पृष्ठ 594 सअद बिन उबादा प्रकाशन दारुल जैल बेरूत1992 ई) (अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 461 सअद बिन उबादा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत1990 ई) (सैरुस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 377 सअद बिन उबादा प्रकाशन दारुल इशाअत कराची 2004 ई)

एक रिवायत यह भी है कि अन्सार का झंडा जंग बदर के रोज़ हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि के पास था। यह अल-मुस्तदरिक की रिवायत है।

(अल-मुस्तदरिक अलस्सहीहैन भाग 3 पृष्ठ 282किताब मअरफितुस्सहाब: बाब ज़िक्र मनाक़िब सअद बिन उबादा हदीस 5096 दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 2002 ई)

जंग बदर पर रवानगी के वक़्त हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि ने अज़ब नामी तलवार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में तोहफा के रूप में पेश की और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग बदर में इसी तलवार के साथ शिरकत की थी।

(सुबुलुल हुदा वर्रिशाद भाग 4 पृष्ठ 24 बाब ग़ज़व बदर अलकुबरा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1993 ई)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में एक गधा भी हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि ने तोहफा के रूम में पेश किया था

(सुबुलुल हुदा वर्रिशाद भाग 7 पृष्ठ 406 अलबाब 4 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया 1993 ई)

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास सात ज़िरहें थीं। उनमें से एक का नाम ज़अतुस फुज़ूल था। यह नाम उसे उस की लंबाई की वजह से दिया गया था और यह ज़िरह जो थी हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में तब भिजवाई थी जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बदर की तरफ़ रवाना हो चुके थे और यह ज़िरह लोहे की थी। यह वही ज़िरह थी जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबू शह यहूदी के पास जौ के बदला में बतौर रेहन रखवाई थी और जौ का वज़न तीस साअ था और एक साल की मुद्दत के लिए बतौर क़र्ज़ लिया गया था।

(सुबुलुल हुदा वर्रिशाद भाग 7 पृष्ठ 368 अल्बाब 4 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया 1993 ई)

हज़रत इब्न अब्बास रज़ि से मर्वी है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडा हज़रत अली रज़ि के पास होता और अन्सार का झंडा हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि के पास होता और जब जंग ज़ोरों पर होती तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अन्सार के झंडे तले होते।

(मस्नद अहमद बिन हनबल भाग 1 पृष्ठ 917 मस्नद अब्दुल्लाह बिन अब्बास हदीस 3486 प्रकाशन आलिमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

अर्थात दुश्मनों का जो अधिकतर ज़ोर था अन्सार की तरफ़ होता था क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी वहीं होते थे।

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक गधे पर सवार हुए जिस पर फ़दक की बनी हुई कंबल डाली हुई थी और आप (स) ने हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि को पीछे बिठा लिया। हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि की इयादत को जा रहे थे क्योंकि हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि इन दिनों में बीमार थे, जो बनू हारिस बिन ख़ज़रज के मुहल्ले में थे। यह घटना जंग बदर से पहले की है। हज़रत उसामह रज़ि कहते थे कि चलते चलते आप (स) एक ऐसी मज्लिस के पास से गुज़रे जिसमें अबदुल्लाह बिन उबई बिन सलूल था और यह उस वक़्त की घटना है कि अबदुल्लाह बिन उबई बिन सलूल जो था अभी मुस्लमान नहीं हुआ था और यह वही घटना है जिसमें अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बदतमीज़ी का व्यवहार दिखाया था। बहरहाल जब आप (स) सवारी के जानवर पर बैठे हुए जा रहे थे तो इस की गर्द, मिट्टी उड़ी और इस मज्लिस पर पड़ी। वे लोग किनारे सड़क के बैठे होंगे तो अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल ने अपनी चादर से अपनी नाक को ढाँका और कहने लगा कि हम पर गर्द ना उड़ाओ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको अस्सलामो अलैकुम कहा और ठहर गए। जब उसने ये बात की है तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम ने अपनी सवारी को खड़ा कर लिया। ठहर गए और अस्सलामो अलैकुम कहा और गधे से उतरे। आप (स) ने उनको अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाया और उन्हें क़ुरआन पढ़ कर सुनाया। अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल ने कहा मर्द !जो बात तुम कहते हो इस से अच्छी कोई बात नहीं। अगर यह सच है तो हमारी मज्लिस में आकर इस से तकलीफ़ ना दिया करो। हमारी मज्लिस में आने की , ये बातें कहने की कोई ज़रूरत नहीं। संक्षिप्त पहले भी एक बार मैं यह वर्णन कर चुका हूँ। अपने ठिकाने पर ही वापस जाओ। फिर जो तुम्हारे पास आए उसे वर्णन करो। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहह रज़ि भी वहां बैठे हुए थे, मुस्लमान हो चुके थे, सहाबी थे उन्होंने यह सुनकर कहा कि नहीं हे अल्लाह के रसूल! आप (स) हमारी इन मज्लिसों में ही आकर हमें पढ़ कर सुनाया करें। हमें तो ये बात पसन्द है। इस पर मुस्लमान, मुशरिक और यहूदी एक दूसरे को बुरा-भला कहने लगे। क़रीब था कि एक दूसरे पर हमला करते मगर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनका जोश दबाया। आख़िर वे रुक गए। इस के बाद फिर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने जानवर पर सवार हो कर चले गए यहां तक कि हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि के पास आए। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन से सअद! क्या तुमने सुना जो अबू हुबाब ने कहा। आप (स) की मुराद अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल से थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उसने मुझे यूं यूं कहा है। हज़रत सअद

बिन उबादह रज़ि ने कहा हे रसूलुल्लाह आप (स) उस को माफ़ कर दें और इस से दरगुज़र कीजीए। इस ज़ात की क़सम है जिसने आप पर किताब नाज़िल फ़रमाई है। अल्लाह वह हक़ अब यहां ले आया है जिसको उसने आप (स) पर नाज़िल किया है। इस बस्ती वालों ने तो यह फ़ैसला किया था कि इस को अर्थात अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल को सरदारी का ताज पहना कर इमामा उस के सिर पर बांधीं। जब अल्लाह तआला ने इस हक़ की वजह से जो अल्लाह ताला ने आप (स) को प्रदान किया है यह मन्ज़ूर ना किया तो वह हसद की आग में जल गया। इसलिए उसने वह कुछ किया जो आप (स) ने देखा आर्थात वह सरदार बनने वाला था और आप (स) के आने से इस की सरदारी जाती रही। इस वजह से इस को हसद है। आप (स) से जलन है और उसने यह सब कुछ कहा है। यह सुनकर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस से दरगुज़र किया और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप (स) के सहाबा मुशरिकों और अहले किताब से जैसा कि अल्लाह तआला ने उन्हें हुक्म दिया दरगुज़र किया करते थे और उनके कष्ट पहुंचाने पर पर सब्र किया करते थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है

لَتُبْلَوُنَّ فِيْ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا اَذًى كَثِيْرًا ۔ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ

(आले इम्रान187)कि तुम ज़रूर अपने मालों और अपनी जानों के मामले में आज़माऐ जाओगे और तुम ज़रूर उन लोगों से जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई और उनसे जिन्हों ने शिर्क किया बहुत तकलीफ़ वाली बातें सुनोगे और अगर तुम सब्र करो और तक़्वा धारण करो तो निसन्देह एक बड़ा हिम्मत वाला काम है। और फिर अल्लाह तआला ने फ़रमाया है

وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْ بَعْدِ إِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ أَنْفُسِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَأْتِيَ اللّٰهُ بِأَمْرِهٖ إِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

(अल-बकर: 110)अहले किताब में से बहुत से लोग बाद उस के कि हक़ उन पर ख़ूब खुल चुका है इस हसद की वजह से जो उनकी अपनी ही जानों से पैदा हुआ है चाहते हैं कि तुम्हारे ईमान ले आने के बाद तुम्हें फिर काफ़िर बना दें अत: तुम उस वक़्त तक कि अल्लाह अपने हुक्म को नाज़िल फ़रमाए उन्हें माफ़ करो और उनसे दरगुज़र करो और अल्लाह यक़ीनन हर एक बात पर पूरा पूरा क़ादिर है

और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क्षमा को ही उचित समझते थे जैसा कि अल्लाह तआला ने आप (स) को हुक्म दिया था। आख़िर अल्लाह ने उनको इजाज़त दे दी जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदर के मुक़ाम पर उनका अर्थात काफ़िरों का मुक़ाबला किया और अल्लाह तआला ने इस लड़ाई में कुफ़्फ़ार के, क़ुरैश के बड़े बड़े सरग़ने मार डाले तो अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल और जो उस के साथ मुशरिक और बुतपरस्त लोग थे तब वे कहने लगे कि अब तो ये सिलसिला शानदार हो गया है। काफ़िरों की ये शिकस्त देखकर तब उनको यक़ीन आया उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस्लाम पर क़ायम रहने की बैअत कर ली और मुस्लमान हो गए।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल तफ़सीर,तफ़सीर आले इमरान हदीस 4566)

जंग बदर के अवसर पर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब सहाबह रज़ि से परामर्श किया की तो हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि ने इस अवसर पर जो कहा उस के बारे में एक रिवायत में वर्णन मिलता है। हज़रत अन्स रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब अबू-सुफ़ियान के आने की ख़बर मिली तो आप (स) ने मश्वरा किया। रावी कहते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ि ने गुफ़्तगु की। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन की तरफ ध्यान न फरमाया । फिर हज़रत उमर रज़ि ने गुफ़्तगु की, मश्वरे देने चाहे। आप (स) ने उन की तरफ भी ध्यान न फ़रमाया। फिर हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि खड़े हुए और कहने लगे हे रसूलुल्लाह !आप (स) हमसे मश्वरा मांगते हैं। उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है अगर आप (स) हमें समुंद्र में घोड़े डालने का हुक्म दें तो हम उन्हें डाल देंगे। अगर आप हमें बरकुल ग़िमाद,यमन का एक शहर है जो मक्का से पाँच रात की दूरी पर समुंद्र के किनारे स्थित है, इस तक उनके जिगर मारने का हुक्म दें तो हम ऐसा ज़रूर करेंगे। रावी कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों को बुलाया। वे चले यहां तक कि बदर में उतरे। यह बात सुन के फिर आप (स) अपने साथियों को साथ लेकर चले और बदर के मुक़ाम तक पहुंचे। वहां क़ुरैश के पानी लाने वाले आए और उनमें बनू हुज्जाज का एक काला लड़का भी था। उन्होंने उसे पकड़ लिया अर्थात मुस्लमानों ने उसे पकड़ लिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा इस से अबूसुफ़ियान और इस के साथियों के बारे में पूछते रहे। क्योंकि पहले यही पता लगा था कि अबूसुफ़ियान अपने एक बड़े लश्कर के साथ या शायद गिरोह के साथ आ रहा है। बहरहाल उनसे अबू सुफ़ियान के बारे में पूछते रहे। वह यह कहता रहा कि मुझे अबूसुफ़ियान के बारे में कुछ पता नहीं लेकिन यह अबुजहल और उत्बा और शैबा और उमय्य बिन ख़लफ़ हैं। ये ज़रूर यहां बैठे हुए हैं, अबुजहल भी है, उतबा भी है, शैबा भी है, उमय्य बिन ख़लफ़ भी है। जब उसने यह कहा तो उन्होंने उसे मारा। उसने कहा अच्छा मैं तुम्हें बताता हूँ। यह है अबूसुफ़ियान अर्थात कि अबूसुफ़ियान भी उनमें शामिल है। जब उन्होंने उसे छोड़ दिया और इस से फिर पूछा तो उसने कहा कि मुझे अबूसुफ़ियान का कोई ज्ञान नहीं लेकिन यह अबुजहल और उतबा और शैबा और उमय्य बिन ख़लफ़ लोगों में मौजूद हैं। यह जो गिरोह आया हुआ है या एक लश्कर बदर के क़रीब ठहरा हुआ है इस में ये ये लोग मौजूद हैं लेकिन अबूसुफ़ियान नहीं है। जब उसने ऐसा कहा तो उन्होंने फिर उसे मारा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस वक़्त खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे जब आप (स) ने यह सूरत देखी तो सलाम फेरा और फ़रमाया कि इस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! जब वह तुमसे सच बोलता है तो तुम उसे मारते हो और जब वह तुमसे झूट बोलता है तो तुम उसे छोड़ देते हो। रावी कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह लड़का जो कह रहा है ठीक कह रहा है। फिर फ़रमाया कि यह अमुक के गिरने की जगह है। अर्थात जो दुश्मनों के नाम लिए थे। और बताया कि यह बदर का मैदान है यहां अमुक गिरेगा। रावी कहते हैं आप (स) अपना हाथ ज़मीन पर रखते थे कि यहां यहां। रावी कहते हैं उनमें से कोई अपनी जगह से इधर उधर नहीं हटा अर्थात जो दुश्मन थे वहीं गिरे और मरे जहां रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हाथ से निशानदेही की थी

(सही मुस्लिम किताबुल जिहाद वसैर बाब ग़ज़वा बदर हदीस 1779) (फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 57 प्रकाशन ज़व्वार अकैडमी कराची 2003 ई)

जंग उहद से पहले एक जुम्अ: की शाम हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि, हज़रत उसीद बिन हुज़ैर रज़ि और हज़रत सइद बिन उबादह रज़ि मस्जिद नबवी में हथियार पहने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दरवाज़े पर सुबह तक पहरा देते रहे। जंग उहद के लिए जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीने से निकलने लगे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने घोड़े पर सवार हुए और कमान कंधे पर डाल ली और नेज़ा अपने हाथ में ले लिया तो दोनों सअद अर्थात हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि और हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि आप (स) के आगे आगे दौड़ने लगे। ये दोनों सहाबा ज़िरह पहने हुए थे और बाक़ी लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दाएं और थे।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 2 पृष्ठ 28 से30 ग़ज़व रसूलुल्लाह प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत1990 ई)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने जंग उहद के हालात वर्णन करते हुए लिखा है कि

''आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा की एक बड़ी जमाअत के साथ नमाज़ अस्र के बाद मदीने से निकले। क़बीला औस और ख़ज़रज के रईस सअद बिन मुआज़ रज़ि और सअद बिन उबादह रज़ि आप (स) की सवारी के सामने धीरे- धीरे दौड़ते जाते थे और बाक़ी सहाबा आप (स) के दाएं और बाएं और पीछे चल थे।''

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम-ए , पृष्ठ 486)

जंग उहद के अवसर पर जो सहाबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास साबित क़दमी से खड़े रहे उनमें हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि भी थे।

(सुबुलुल हुदा वर्रिशाद भाग 4 पृष्ठ 197 ज़िक्र सिबात रसूलुल्लाह प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1993 ई)

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जंग उहद से मदीना वापस तशरीफ़ लाए और अपने घोड़े से उतरे तो आप हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि और हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि का सहारा लेते हुए अपने घर में दाख़िल हुए।(सुबुलुल हुदा वर्रिशाद भाग 4 पृष्ठ 229 बाब ग़ज़वा उहद ज़िक्र रहील रसूलुल्लाह अलमदीनत, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1993 ई)ज़ख़मी थे। इस हालत में जब उतरे तो आप (स) ने इन दोनों का सहारा लिया

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह वर्णन करते हैं कि जंग हमराउल असद में हमारा खाना खजूरें थीं। जंग हमराउल असद शवाल 3 हिज्री में हुआ। जंग उअहद से वापसी पर क़ुरैश के लोग रोहा मुक़ाम पर ठहरे जो मदीना से 36 मील की दूरी पर स्थित है। इस जगह क़ुरैश को ख़्याल आया कि मुस्लमानों को नुक़्सान बहुत पहुंचा है। वापस जा कर मदीने पर अचानक हमला कर देना चाहिए और मुस्लमान मुक़ाबला नहीं कर सकेंगे क्योंकि काफ़ी उनको नुकसान पहुँच चुका है। उधर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़ुरैश के पीछा करने निकले और हमराउल असद मुक़ाम तक

पहुंचे। आप (स) को भी पता लगा कि यह इरादा है तो आप (स) ने कहा चलो हम उनके पीछे चलते हैं। हमराउल असद मदीना से ज़ुल हलीफ़ा की तरफ आठ मील की दूरी पर है। क़ुरैशी लश्कर को जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह ख़बर मिली तो वह मक्का की तरफ़ भाग खड़ा हुआ। जब उन्होंने देखा कि मुसलमान बजाय उस के कि कमज़ोर हूँ यह तो हम पर हमला करने आ रहे हैं तो वे दौड़ गए। हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि तीस ऊंट और खजूरें लाए जो हमराउल असद मुक़ाम तक हमारे लिए बहुत रहीं। रावी ने लिखा है वे ऊंट भी लेकर आए थे जो किसी दिन दो या किसी दिन तीन कर के ज़बह किए जाते थे।(सुबुलुल हुदा भाग 4 पृष्ठ 310 अलबाब 4 अशर फ़ी ग़ज़वतुल हमराउल असद प्रकाशन दारुल कुतुब बेरूत 1993 ई) (फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 106 प्रकाशन ज़व्वार अकैडमी कराची 2003 ई) (सीरत ख़ातमन्नबय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 354) (शरह अज़जरकानी भाग 2 पृष्ठ 464 बाब ग़ज़वा हमराउल अद प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1996 ई और उनको खाया जाता था। जंग बनू नज़ीर, ये जंग रबी उल अव्वल 4 हिज्री में हुआ था। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यहूद के क़बीला बनू नज़ीर के क़िलों का15 रोज़ तक घेराव किया था। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन लोगों को ख़ैबर की तरफ़ देश निकाला कर दिया था। इस मौक़ा पर अम्वाल ग़नीमत हासिल हुआ तो आप (स) ने हज़रत साबित बिन क़ैस को बुला कर फ़रमाया। मेरे पास अपनी क़ौम को बुलाओ। हज़रत साबित बिन क़ैस ने निवेदन क्या या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम! क्या ख़ज़रज को? आप (स) ने फ़रमाया नहीं समस्त अन्सार को बुलाओ। अत: उन्होंने औस और ख़ज़रज को आप (स) के लिए बुलाया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला की प्रशंसा वर्णन की जिसका वह योग्य है। फिर आप (स) ने अन्सार के इन उपकारों का ज़िक्र किया जो उन्होंने मुहाजिरीन पर किए हैं। तुमने मुहाजिरीन पर किस तरह उपकार किए हैं कि उन्हें अपने घरों में ठहराया और मुहाजिरीन को अपने नफ़ूस पर प्राथिमकता दी। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर तुम पसंद करो तो मैं बनू नज़ीर से हासिल होने वाले माल से, वे अम्वाल ग़नीमत जो कुफ़्फ़ार से जंग के बग़ैर मुस्लमानों को हासिल हो, ये वह माल था, इस में से तुम में और मुहाजिरीन में बराबर तक़सीम कर दूं। इस हालत में मुहाजिरीन पहले की तरह तुम्हारे घरों और मालों में रहेंगे और अगर तुम पसंद करो तो ये माल में मुहाजिरीन में तक़सीम कर दूं, अर्थात आधा आधा तक़सीम करूँ तो ठीक है जिस तरह तुम पहले उनसे सुलूक कर रहे हो मुहाजिरीन से करते रहो, तुम्हारे घरों में भी रहते रहेंगे। भाईचारा क़ायम रहेगा जिस तरह यह सिलसिला चल रहा है। लेकिन अगर तुम पसंद करो तो ये अम्वाल में मुहाजिरीन में तक़सीम कर दूं जिसके नतीजा में वे तुम्हारे घरों से निकल जाऐंगे। माल सारा उनको मिल जाएगा लेकिन वे तुम्हारे घरों से फिर निकल जाऐंगे। कोई हक़ नहीं रहेगा जो पहले एक क़ायम किया गया था। इस पर हज़रत सअद बिन उबादा रज़ी अल्लाह ताला अन्हो और हज़रत सअद बिन मुआज़ओ दोनों ने निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम ! आप (स) ये अम्वाल मुहाजिरीन में तक़सीम फ़र्मा दें और वे हमारे घरों में इसी तरह होंगे जैसा कि पहले थे। हमें कोई ज़रूरत नहीं। आप ये तमाम माल इन्ही में तक़सीम कर दें। अन्सार को देने की ज़रूरत नहीं है लेकिन उनका जो हक़ है और मुहाजिरीन और अन्सार की जो भाईचारा क़ायम हुई हुई है, जो हक़ है हमारे घरों में आने जाने का, रहने का वह भी इसी तरह क़ायम रहेगा और अन्सार ने ऊंची आवाज़ में निवेदन किया की कि हे रसूलुल्लाह !हम राज़ी हैं और हमारा सिर झुका हुआ है। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे अल्लाह!अन्सार और अन्सार के बेटों पर रहम फ़र्मा।

अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जो माल फैय प्रदान फ़रमाया वह आपने मुहाजिरीन में तक़सीम फ़रमाया और अन्सार में से दो सहाबा के इलावा किसी को कुछ ना दिया वे दोनों सहाबा जो अन्सार के थे ज़रूरतमंद थे वे दोनों हज़रत सहल बिन हुनीफ़ रज़ि और हज़रत अबू दजानह रज़ि थे और आपने हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि को इब्न अबी हक़ीक़ की तलवार फ़रमाई।

(सुबुलुल हुदा वर्रिशाद भाग 4 पृष्ठ 325 ज़िक्र ख़ुरूज बनी अन्नज़ीर मिन अरज़त प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1993 ई) (एटलस सीरते नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पृष्ठ 264-265 दारुस्सलाम 1424हिदरी (उम्दतुल-कारी शरह सही अल-बुख़ारी भाग 12 पृष्ठ 204 किताबुल वकालत प्रकाशन दारे अहया अत्तुरास बेरूत 2003 ई)

हज़रत सअद रज़ि की माता हज़रत उमरा बिन्त मसय्यब रज़ि जो सहाबियात में से थीं उनकी वफ़ात उस वक़्त हुई जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जंग दूमतुल जनदल के लिए तशरीफ़ ले गए थे। यह जंग रबी उल-अव्वल 5 हिज्री में हुई थी। हज़रत सअद रज़ि इस ग़ज़वा में आप (स) के साथ थे

सईद बिन मुसय्यब रज़ि से रिवायत है कि हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि की माता का देहान्त उस वक़्त हुई जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना से बाहर थे। सअद ने निवेदन किया कि मेरी माता की वफ़ात हो गई है और मैं चाहता हूँ कि आप (स) उनकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ाऐं। आप (स) ने नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई हालाँकि उन्हें फ़ौत हुए एक महीना हो चुका था। एक महीने के बाद उन्हें ख़बर पहुंची थी। हज़रत इब्न अब्बास रज़ि से रिवायत है कि सअद बिन उबादह रज़ि ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से एक नज़र के बारे में पूछा जो उनकी माता पर थी और वह इस को पूरा करने से पहले ही वफ़ात पा गई थीं। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम उनकी तरफ़ से उसे करो।

हज़रत सईद बिन मुसय्यब रज़ि से रिवायत है कि हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और निवेदन की कि मेरी माता की वफ़ात हो गई है। उन्होंने वसीयत नहीं की थी। अगर मैं उनकी तरफ़ से सदक़ा दूं तो क्या वह उन्हें लाभदायक होगा? आप (स) ने फ़रमाया हाँ। उन्होंने निवेदन किया कि कौन सा सदक़ा आप (स) को ज़्यादा पसन्द है? आप (स) ने फ़रमाया पुलाव।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 461-462 सअद बिन उबादा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1990 ई)

लगता है इस वक़्त पानी की कमी थी। काफ़ी ज़रूरत थी। बहरहाल एक रिवायत में है कि इस पर हज़रत सअद ने एक कुँआं खुदवाया और कहा कि यह उम्मे सअद के लिए है। उनके नाम पर वह जारी कर दिया।

अल्लामा अबू तय्यब शमसुल हक़ अज़ीमाबादी हैं उन्होंने अबू दाऊद की शरह में लिखा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो यह फ़रमाया कि सबसे अफ़ज़ल सदक़ा पानी है अर्थात हज़रत सअद रज़ि को कहा कि पानी पुलाव। इस की वजह यह थी कि इन दिनों में पानी कम था या इसलिए कि पानी की ज़रूरत आम तौर पर समस्त चीज़ों की निसबत सबसे ज़्यादा होती है। फिर लिखते हैं कि पानी का सदक़ा आप (स) ने इसलिए भी अफ़ज़ल क़रार दिया क्योंकि यह धार्मिक और दुनियावी मामलों में विशेष रूप से इन गर्म देशों में सबसे ज़्यादा लाभ दायक चीज़ है इसलिए अल्लाह ताला ने इस आयत में इस एहसान का ज़िक्र फ़रमाया है कि

وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً طَهُورًا

कि और हमने आसमान से पाकीज़ा पानी उतारा। वहां मदीने में पानी अफ़ज़ल चीज़ था। गर्मी की शिद्दत की वजह से प्राय ज़रूरत और पानी की कमयाबी की वजह से इस को बहुत क़ीमती समझा जाता था।

(औनुल मअबूद शरह सुनन अबी दाऊद भाग 3 पृष्ठ 65-66 किताबुल ज़कात बाब फ़ी फ़ज़ल सकी उल मा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 2002 ई)

और पानी को तो आज भी क़ीमती समझा जाता है। इस के लिए हुकूमतें भी कहती रहती हैं। ख़्याल भी रखना चाहिए। बहरहाल उन्होंने सिर्फ उसी पर बस नहीं किया कि पानी का कुँआं खोद दिया। हज़रत इब्न अब्बास रज़ि वर्णन करते हैं कि हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि जो बनू साइदा में से थे उनकी माता फ़ौत हो गईं और इस वक़्त वह मौजूद ना थे। वह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए उन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल! मेरी माता फ़ौत हो गई हैं और मैं उस वक़्त उनके पास मौजूद ना था। यह आने के बाद पता लगा होगा। पहले शायद मैंने सफ़र में कह दिया था। बहरहाल सफ़र में पता लगा या आने के बाद पता लगा लेकिन बहरहाल वह मौजूद नहीं थे। वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में आए और इस वक़्त यह निवेदन किया कि मैं मौजूद नहीं था तो क्या मेरा उनकी तरफ़ से कुछ सदक़ा करना उनको लाभ देगा? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हाँ। तो उन्होंने निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल!फिर मैं आप (स) को गवाह ठहराता हूँ कि मेरा बाग़ मिख़राफ है वह उनकी तरफ़ से सदक़ा है।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल वसाया,बाबुल वकफ अस्सदक: हदीस 2762)

सदक़ा और ख़ैरात और ग़रीबों की मदद में बड़ा खुला दिल रखते थे और बड़ा खुला हाथ रखते थे। अभी उनका ज़िक्र चल रहा है। इंशा अल्लाह आगे भी वर्णन होगा।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 17 जनवरी 2020 ई पृष्ठ 5 से 9)

☆ ☆ ☆
☆ ☆
☆

ख़ुत्बः जुमअः

''ख़ुश-क़िस्मत वह व्यक्ति है कि ख़ुदा से मुहब्बत करे '

तहरीक वक़्फ़ जदीद के बासठवें साल के दौरान कुल जमाअत अहमदिया की तरफ़ से छयानवे लाख तैंतालीस हज़ार पाऊंडज़ की बेमिसाल कुरबानी।

केवल माल जमा करना मक़सद नहीं है बल्कि ख़ुदा तआला की मुहब्बत के लिए उस के धर्म के लिए क़ुर्बानी करना मक़सद है

नए आने वालों को माली निज़ाम या माली क़ुर्बानी के निज़ाम में ज़रूर शामिल करना चाहिए।

तंगी के हालात हों, ग़ुर्बत की हालत हो और फिर ख़ुदा तआला की मुहब्बत को हासिल करने के लिए ख़ुदा तआला के धर्म के लिए माली क़ुर्बानी की जाए तो यह असल क़ुर्बानी है जो अल्लाह तआला का क़ुर्ब दिलाने का माध्यम भी बनती है।

अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ऐसे लोग प्रदान फ़रमाए जो ख़ुदा की मुहब्बत को प्राप्त करने के लिए हर किस्म की क़ुर्बानी के लिए तैयार रहते थे।

इख़लास में दिया हुआ यह थोड़ा सा भी अल्लाह तआला के नज़दीक ऐसा क़बूल होता है कि कई गुना बढ़ा कर फिर अल्लाह तआला वापस करता है ये घटनाएं विभिन्न स्थानों की हैं, कोई अफ़्रीक़ा में है, कोई अमरीका में है, कोई यूरोप में है, कोई उत्तर में है, कोई पूर्व में है और आपस में उनका सम्बन्ध और सम्बन्ध भी कोई नहीं लेकिन मिलते-जुलती घटनाएं हैं।

ये कोई इत्तिफ़ाक़ी बातें नहीं हैं। ये उन लोगों पर जो इस पर भरोसा करते हैं उनके ईमान को मज़बूत करने के लिए अल्लाह तआला के सुलूक हैं और इस में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त की भी दलील है।

बच्चे हैं या बड़े, नई बैअत करने वाले हैं या पुराने अहमदी उनको ये इदराक हासिल है कि अल्लाह तआला की मुहब्बत को पाने का एक माध्यम उस की राह में माल ख़र्च करना है।

अल्लाह तआला समस्त क़ुर्बानी करने वालों की दुनिया में माल तथा नफ़सूं में बे-इंतिहा बरकत प्रदान फ़रमाए।

वक़्फ़ जदीद के नए साल के आरम्भ के अवसर पर दुनिया भर में बसने वाले अहमदियों की क़ुर्बानी की घटनाओं का उमूमी वर्णन, दुनिया की बिगड़ती अवस्था के सम्मुख दुआओं की नसीहत नए साल की हक़ीक़ी मुबारकबाद और एक अहमदी की ज़िम्मेदारियों का वर्णन।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 3 जनवरी 2020 ई. स्थान - मस्जिद 'बैयतुल फ़ुतूह मोर्डन सिर्रे (यू. के)

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी महान पुस्तक 'इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी मैं ख़ुदा तआला को पाने, उसे पहचानने, इस पर ईमान मज़बूत करने के जो माध्यम ख़ुदा तआला ने रखे हैं उनका वर्णन करते हुए आठ माध्यम वर्णन फ़रमाए हैं जो इन्सान के जन्म के उद्देश्य को पूरा करने वाले भी हैं। इस वक़्त मैं अपने मज़मून के हवाले से एक माध्यम के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उद्धरण प्रस्तुत करूँगा जो पांचवें माध्यम के तौर पर आप ने ब्यान फ़रमाया है। आप फ़रमाते हैं कि

''पांचवां माध्यम उच्च मक़्सद के पाने के लिए ख़ुदा तआला ने मुजाहिदा (चेष्ठा) ठहराया है। अर्थात अपना माल ख़ुदा की राह में ख़र्च करने के माध्यम से और अपनी ताक़तों को ख़ुदा की राह में ख़र्च करने के माध्यम से और अपनी जान को ख़ुदा की राह में ख़र्च करने के माध्यम से और अपनी अक़ल को ख़ुदा की राह में ख़र्च करने के माध्यम से उस को ढूंढा जाए। जैसा कि वह फ़रमाता है।

جَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ (अत्तौबा41) وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا (अलअनकबूत 70)अर्थात अपने मालों और अपनी जानों और अपने नफ़सों को उनकी समस्त ताक़तों के साथ ख़ुदा की राह में ख़र्च करो। और जो कुछ हमने अक़ल और इलम और फ़हम और हुनर इत्यादि तुम को दिया है। वे सब कुछ ख़ुदा की राह में लगाओ। जो लोग हमारी राह में हर एक तौर से कोशिश करते हैं हम उनको अपनी राहें दिखा दिया करते हैं।'

(इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी, रुहानी ख़ज़ाइन भाग10 पृष्ठ 418-419)

फिर ख़ुदा तआला की मुहब्बत प्राप्त करने का तरीक़ बताते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि

''तुम्हारे लिए मुम्किन नहीं कि माल से भी मुहब्बत करो और ख़ुदा से भी। सिर्फ एक से मुहब्बत कर सकते हो। अत: ख़ुश-क़िस्मत वह व्यक्ति है कि ख़ुदा से मुहब्बत करे। और अगर कोई तुम में से ख़ुदा से मुहब्बत कर के इस की राह में माल ख़र्च करेगा तो मैं यक़ीन रखता हूँ कि इस के माल में भी दूसरों की तुलना में ज़्यादा बरकत दी जाएगी। क्योंकि माल अपने आप नहीं आता बल्कि ख़ुदा के इरादा से आता है। अत: जो व्यक्ति ख़ुदा के लिए कुछ हिस्सा माल का छोड़ता है वे ज़रूर उसे पाएगा लेकिन जो व्यक्ति माल से मुहब्बत कर के ख़ुदा की राह में वे ख़िदमत नहीं करता जो करनी चाहिए तो वह ज़रूर उस माल को खोएगा।'

(मज्मूआ इश्तिहारात भाग 3 पृष्ठ 497)

फिर आप ने फ़रमाया कि चाहिए कि हमारी जमआत का हर एक आदमी, हर व्यक्ति यह वादा करे कि मैं इतना चंदा दिया करूँगा। जो व्यक्ति अल्लाह तआला के लिए वादा करता है अल्लाह तआला उस के रिज़्क़ में बरकत देता है।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 41)

आप ने इस तरफ़ तवज्जा दिलाई है कि जिनको इल्म नहीं, जो नए आने वाले हैं, जो लापरवाई करते हैं या लापरवाई नहीं भी करते तो कई बार माली क़ुर्बानी करने का एहसास नहीं होता। ऐसे लोगों को समझाना चाहिए कि अगर तुम सच्चा सम्बन्ध रखते हो तो ख़ुदा तआला से पका वादा कर लो कि इतना चंदा ज़रूर दिया करूँगा। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से लाखों मुख़लसीन हैं जिनको जब चंदे के महत्तव की तरफ़ तवज्जा दिलाई जाए तो अल्लाह तआला की मुहब्बत को हासिल करने के लिए माली क़ुर्बानी में बढ़ने की कोशिश करते हैं और यही वजह है कि मैं पिछले कई साल से जमाअत के निज़ाम को इस तरफ़ तवज्जा दिला रहा हूँ कि नए आने वालों को माली निज़ाम या माली क़ुर्बानी के निज़ाम में ज़रूर शामिल करना चाहिए। कोई चाहे पीनस (pence)देने का ही सामर्थय रखता हो तो वे अपने सामर्थय के अनुसार एक पीनस दे। कई जगह यह भी देखने में आया है कि कई बार माली सुविधा के लोग यह कह देते हैं या जमाअत का निज़ाम अफ़्रीक़ा में या ग़रीब मुल्कों में कई जगहों पर कई लोगों को कई बार यह कह देता है यहां कई लोग अपने ग़रीब रिश्तेदारों की तरफ़ से चंदे की अदायगी कर देते हैं या ग़रीबों की तरफ़ से रक़म दे

देते हैं कि अच्छा यह हमारी तरफ़ से चंदा है। ठीक है यह भी एक नेकी है लेकिन उन लोगों को, चाहे वे ग़रीब हैं ख़ुद हिस्सा लेना चाहिए जितनी भी इस का सामर्थय हो। सिर्फ माल जमा करना मक़सद नहीं है बल्कि ख़ुदा तआला की मुहब्बत के लिए उस के धर्म के लिए क़ुर्बानी करना मक़सद है। अत: जहां जमाअत का निज़ाम इस तरह चंदा वसूल करता है और कई बार ऐसी बातें मेरे इल्म में आ जाती हैं कि लोगों से कह दिया और किसी के नाम पर डाल दिया वह ग़लत है।

बहरहाल उमूमी तौर पर मैंने देखा है बल्कि माली क़ुर्बानीयों की जो रिपोर्टें आती हैं उनमें खासतौर पर यह देखने में आया है कि ग़रीब लोगों की माली क़ुर्बानीयों का ज़िक्र ज़्यादा होता है। उन्हें ज़्यादा एहसास होता है कि हमने माली क़ुर्बानी करनी है और मैं अक्सर अपने ख़ुत्बों में उनका ज़िक्र भी कर देता हूँ, ब्यान भी कर देता हूँ। कई की क़ुर्बानियां देखकर हैरत होती है। अगर किसी के पास माल की अधिकता हो, बेशुमार माल हो, दौलत हो और इस में से कुछ दे दिया जाए तो यह कोई ग़ैरमामूली बात नहीं है लेकिन तंगी के हालात हों, ग़ुर्बत की हालत हो और फिर ख़ुदा तआला की मुहब्बत को हासिल करने के लिए ख़ुदा तआला के धर्म के लिए माली क़ुर्बानी की जाए तो यह असल क़ुर्बानी है जो अल्लाह तआला का क़ुर्ब दिलाने का माध्यम भी बनती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में ऐसे उदाहरण देखने में आते थे। एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को कुछ किताबों की इशाअत के लिए कुछ रक़म की ज़रूरत पड़ी और जब किसी दोस्त को कहा गया कि यह ज़रूरत है, अपनी जमाअत में तहरीक करें ता कि इतना चंदा वो जमाअत अदा कर दे तो बजाय जमाअत में तहरीक करने के अपनी तरफ़ से उन्होंने अपने जो तंग हालात थे, उतनी कोई आसानी भी नहीं थी या कहना चाहिए कि तंग हालात ही थे लेकिन इस के बावजूद वह रक़म मुहय्या कर दी और प्रभाव यह दिया कि जिस तरह इस शहर की जमाअत ने यह रक़म दी हो और पता भी नहीं लगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलसलो वस्सलाम के इल्म में भी नहीं आया और यह ज़ाती क़ुर्बानी फिर उस वक़्त ज़ाहिर होती है, इस वक़्त उस का पता चलता है जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसी जमाअत के एक दूसरे व्यक्ति का शुक्रिया अदा करते हुए फ़रमाया कि आपकी जमाअत ने ठीक ज़रूरत के वक़्त बड़ी मदद की है। और जब उनको पता चला कि वह क़ुर्बानी तो एक व्यक्ति ने ही की थी तो बाक़ी जमाअत के लोग उसपे नाराज़ हुए कि हमें इस ख़िदमत का मौक़ा क्यों नहीं दिया गया। यह अदायगी करने वाले मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब रज़ि थे जिन्होंने इस वक़्त अपनी बीवी का ज़ेवर बेच कर के यह रक़म मुहय्या की थी। निसन्देह की बीवी भी इस क़ुर्बानी में शामिल थी। मुंशी अरोड़ा साहिब रज़ि मुंशी ज़फ़र साहिब रज़ि के दोस्त थे और इसी जमाअत के थे उन्हें जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पूछा जब आप के माध्यम से इस क़ुर्बानी का पता चला तो वह कई महीने तक मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब रज़ि से नाराज़ रहे कि क्यों हमें नहीं बताया और क्यों ख़ुद ही यह रक़म की अदायगी की।

(उद्धिरत अस्हाबे अहमद भाग 4 पृष्ठ 97-98)

तो ऐसे ऐसे लोग अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को प्रदान फ़रमाए जो ख़ुदा की मुहब्बत के हुसूल के लिए हर किस्म की क़ुर्बानी के लिए तैयार रहते थे। यह वह नमूना है जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ि ने स्थापित फ़रमाया और जिस पर इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वालों ने अनुकरण किया। और यह उस वक़्त की बात नहीं है बल्कि यह सिलसिला आज तक जारी है। हम देखते हैं कि लोग किस तरह मुख़्तलिफ़ तहरीकों में माली क़ुर्बानियां देते हैं और अपने पर तंगियाँ वारिद कर के माली क़ुर्बानियां करते हैं लेकिन अल्लाह तआला भी जो किसी का उधार नहीं रखता उनको किस तरह लौटा भी देता है। चंद घटनाएं और चंद उदाहरण इस वक़्त में आपके सामने पेश करूँगा। आज क्योंकि वक़्फ़ जदीद के नए साल का ऐलान भी होना है इसलिए प्राय यह घटनाएं वक़्फ़ जदीद के हवाले से हैं।

गेम्बिया के एक लोकल मिशनरी केबाजालो (Kebba Jallow) साहिब हैं। वह घटना ब्यान करते हैं और इस घटना में पता लगता है कि किस तरह अल्लाह तआला का अपने बंदों से, क़ुर्बानी करने वालों से सुलूक है। कहते हैं कि एक नई बाएत करने वाले अहमदी दोस्त अबदुल्लाह जावो (Abdullie Jawo) साहिब जिनका सम्बन्ध एक गांव से है वह मक्की और ग्रांऊड नट की फ़सल बोते थे लेकिन पिछले कुछ सालों से कोई ख़ास फ़सल नहीं उग रही थी। इस साल उन्होंने ग्रांऊड नट के बीज बेच कर के अपना वक़्फ़ जदीद का चंदा अदा कर दिया जो लगभग सात सौ डलासी था ताकि अल्लाह तआला उनके खेती के काम में, ज़मींदारी में बरकत डाले। वह ब्यान करते हैं कि इस माली क़ुर्बानी की वजह से अल्लाह तआला ने उनकी फ़सल में इतनी बरकत डाली कि पिछले साल की तुलना में उन्हें तीन गुना लाभ हुआ। अत: फ़सल लगाते समय उन्होंने मज़ीद एक हज़ार डलासी वक़्फ़ जदीद में किया।

फिर गेम्बिया के उत्तर में स्थित एक गांव है वहां के एक दोस्त उसमान साहिब हैं। कहते हैं कि पिछले साल उन्होंने वक़्फ़ जदीद के लिए एक बाल्टी मक्की देने का वादा किया था। अब अमीर आदमी के पास सुविधाए हैं अगर कोई लाखों पाऊंड रखने वाला हज़ार डालर या हज़ार पाऊंड या पाँच हज़ार पाऊंड भी दे देता है तो उस के लिए कोई ऐसी ख़ास क़ुर्बानी नहीं लेकिन ये लोग जो अपने खाने के लिए, अपने ज़मींदारी के लिए चीज़ रखते हैं। अब एक बाल्टी मक्की जो है इस की एक शहर में रहने वाले के लिए, यूरोप में रहने वाले के लिए कोई हैसियत नहीं लेकिन उनके लिए एक बहुत बड़ी क़ुर्बानी है। इस का, एक बाल्टी मक्की का उन्होंने वादा किया था जो शायद यहां आप को पाँच, छ: पाऊंडज़ में मिल जाए। कहते हैं यद्यपि पिछले साल बहुत कम फ़सल हुई थी और सिर्फ बारह बोरियां फसल मिली थी। मुश्किल से उनके घर के ख़र्च पूरे हो रहे थे लेकिन इस के बावजूद उन्होंने अपना वादा पूरा किया। कहते हैं कि नतीजा यह निकला कि इस साल तीस बोरियां मक्की की उनको मिल गईं और इस के इलावा भी एक फ़सल है, कोई चीज़ है इस की पंद्रह बोरीयां मिलीं। तो इख़लास में दिया हुआ यह थोड़ा सा भी अल्लाह तआला के नज़दीक ऐसा क़बूल होता है कि फिर कई गुना बढ़ा कर अल्लाह तआला वापस करता है और यही फिर उनके लिए अल्लाह तआला को पहुंचने, अल्लाह तआला पर ईमान मज़बूत करने का माध्यम भी है।

कैमरोन के मुअल्लिम हैं वह एक और मिसाल अल्लाह तआला के फ़ज़ल की लिखते हैं। डगोई गांव के एक नई बैअत करने वाले अहमदी साहिब हैं। उनको जब चंदा वक़्फ़ जदीद के लिए बताया गया तो उन्होंने दो बालटियां मक्की चंदे में दे दीं। अब ये छोटी छोटी क़ुर्बानी है जो लोग कर रहे हैं, और मुअल्लिम को बताया कि मेरा फ़ार्म जो है अच्छा नहीं है क्योंकि मेरे पास पैसे नहीं थे तो मैं उस पर ज़्यादा-तर ध्यान नहीं दे सका। गर्वनमैंट मदद करना चाहती है लेकिन इस के लिए भी हुकूमत को कुछ रक़म जमा करानी पड़ती है। इस के नतीजा में फिर हुकूमत भी अपना हिस्सा डालती है। वह कहते हैं मेरे पास यह रक़म नहीं थी। मैं यह भी दे नहीं सकता था। मेरा नाम इस लिस्ट में तो था लेकिन मुझे मिलेगा कुछ नहीं क्योंकि मैंने रक़म जमा नहीं कराई। फिर कहते हैं मुअल्लिम साहिब ने उन्हें कहा कि आप तहज्जुद भी पढ़ना शुरू करें और दुआ भी करें। अल्लाह तआला फ़ज़ल करेगा तो मुअल्लिम साहिब कहते हैं नतीजा यह हुआ कि कुछ दिन पहले मेरे पास आए और उन्होंने बताया कि ख़ुदा तआला ने हमारी दुआएं सुन लीं और मैंने हुकूमत को रक़म अदा भी नहीं की थी जो कुछ अदा करनी ज़रूरी थी उस के बावजूद जो सम्बन्धित विभाग है उसने खेतों के लिए, पानी के लिए जो पंपिंग मशीन थी वह भी उनको दे दी और इस के इलावा पाँच लाख फ्रॉंक सीफ़ा फसलों के बीज के लिए भी दे दिए और उन्होंने अपने फ़ार्म पर बड़ी मेहनत से काम शुरू कर दिया और उम्मीद है कि इस की वजह से उनकी फ़सल अच्छी भी होगी। कहने लगे ख़ुदा तआला ने मेरी छोड़ी सी क़ुर्बानी को क़बूल किया और इस के बदले में मुझे इनामों से नवाज़ा और इस के नतीजा में उन्होंने अपने चंदा वक़्फ़ जदीद को दोगुना कर के किया।

इंडोनेशिया के मुरब्बी सिलसिला नूर ख़ैर साहिब हैं। वह कहते हैं कि एक मियां बीवी जो सादा ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं लेकिन बाक़ायदा चन्दा अदा करते हैं। जो भी कमाई होती है इस में से कुछ रक़म चन्दे के लिए अलग कर के एक बक्स में डाल देते हैं और जब भी मुबल्लिग़ उनके पास दौरे पर जाए तो वह रक़म चंदे में पेश कर देते हैं। कहीं दूर दराज़ द्वीप में रहते हैं। एक बार एक साल से ज़्यादा समय के लिए इस जमाअत में कोई मुबल्लिग़ नहीं जा सका लेकिन इस के बावजूद चंदे की रक़म बाक़ायदगी से जमा करते रहे और एक साल के बाद जब मुबल्लिग़ वहां दौरे पर गया तो इस बक्स में काफ़ी रक़म जमा हो गई थी जो उन्होंने चंदों में अदा कर दी। कहने लगे कि इस बार हमें काफ़ी मुनाफ़ा हुआ है और हमें इस वजह से चंदे की बरकतों पर यक़ीन भी आ गया है और ईमान मज़ीद मज़बूत हुआ है और हम ने इन बरकतों को देख लिया है। कहते हैं कि एक बार हमें किसी ने धोखा दिया। तो सोचा कि क्या वजह है धोके की। ग़ौर किया तो हमें पता चला कि हम ने चन्दा सही तरह अदा नहीं किया था। इसलिए हमारा नुक़्सान हुआ है। अत: उसी वक़्त से उन्होंने बड़ी एहतियात से अपनी जो आय थी उस के सही हिसाब के अनुसार

डिब्बा को भरना शुरू किया, इस में रक़म डालनी शुरू की और कहते हैं जब तक हम चंदे की रक़म अलग न कर लें हमें सुकून और इत्मीनान नहीं मिलता तो इस तरह अल्लाह तआला उनके नुक़्सानों को कुछ के सुधार का भी माध्यम बनाता है और फिर इस से उनका ईमान मज़बूत होता है।

इंडोनेशिया के मुबल्लिग़ बशीरुद्दीन साहिब हैं। वह लिखते हैं कि एक दोस्त ने अपना चंदा वक़्फ़ जदीद पाँच लाख इंडोनेशियन रुपया अदा किया। इंडोनेशियन रुपए की वैल्यू बहुत कम है। बहरहाल उनके हिसाब से यह भी काफ़ी है। कुछ दिनों के बाद किसी ने अपनी ज़मीन उनको बेची जो उन्होंने पंद्रह मिलियन में ख़रीदी और चंद हफ़्तों के बाद ही पच्चास मिलियन में किसी और व्यक्ति ने यह ज़मीन उनसे ख़रीद ली। कहते हैं उनका अब यह यक़ीन है कि चंदा वक़्फ़ जदीद की बरकत से थोड़े ही वक़्त में मुझे पैंतीस मिलियन का मुनाफ़ा हो गया। एक दुनिया वाला इस को अपनी कारोबारी होशयारी समझेगा कि देखो मैंने कितनी होशयारी से कारोबार किया कि चंद हफ़्तों में पंद्रह मिलियन से पैंतीस मिलियन बना लिया लेकिन जो अल्लाह तआला का प्यार हासिल करना चाहते हैं, जो उस की मुहब्बत हासिल करना चाहते हैं, जो उस के लिए क़ुर्बानियां करते हैं उनके दिल में क्या एहसास पैदा हुआ? यह कि क्योंकि मैंने अल्लाह तआला के लिए चन्दा दिया था, क़ुर्बानी की थी तो इस तरह अल्लाह तआला ने मुझे बढ़ा कर अदा कर दिया।

ईमान में मज़बूती की एक और मिसाल इंडोनेशिया की ही है। मासूम साहिब वहां हमारे मुबल्लिग़ हैं लिखते हैं कि एक अहमदी ने रोज़गार के हुसूल के लिए एक जज़ीरा सोला बीसी में हिजरत की। शुरू में बहुत तंग अवस्था थी। यहां तक कि रहने के लिए उनके पास जगह नहीं थी और उन्हें मिशन हाऊस में रहना पड़ा। फिर उन्होंने मछलियों को ख़रीद कर आगे बेचना शुरू किया। मामूली सा कारोबार शुरू किया। बड़ी मेहनत की। बहुत कम आय के बावजूद यह माली क़ुर्बानी में पीछे नहीं हटे और कुछ अर्से बाद ही उनके हालात बदलने लगे। यह कहते हैं कि अब उनका वक़्फ़ जदीद का चन्दा इस इलाक़े में सबसे ज़्यादा है और मूसी भी हैं और कहते हैं कि यह सब मेरी माली क़ुर्बानी का फल है।

गेम्बिया में एक दोस्त अब्दुर्रहमान साहिब हैं। कहते हैं उन्हें अपने बच्चे की स्कूल फ़ीस भरने में बहुत मुश्किल महसूस हो रही थी। अत: उन्होंने सेंट्रल मुब-ल्लिग़ साहिब को बताया कि मुझे बड़ी मुश्किल आ रही है। माली हालात ठीक नहीं तो मुबल्लिग़ ने उन्हें कहा कि चलें आप ये देखें कि माली क़ुर्बानी करें। अल्लाह तआला आप पर फ़ज़ल करेगा। उन्होंने दो सौ पच्चास डलासी चन्दा वक़्फ़ जदीद अदा कर दिया। कहते हैं कि चन्दा अदा करने के ठीक एक हफ़्ते के बाद उन्हें पाँच हज़ार डलासी मासिक पर नौकरी मिल गई जिससे वह आसानी से अपने बच्चे की स्कूल फ़ीस भी अदा कर सकते हैं। इस के इलावा रोज़मर्रा की अन्य ज़रूरतें भी उपलब्ध हो गईं और महोदय अल्लाह तआला के फ़ज़ल को लोगों में बहुत ज़िक्रे करते फिरते हैं कि चंदे की बरकत से मुझ पर अल्लाह तआला ने फ़ज़ल फ़रमाया और जहां मेरे ईमान को मज़बूत किया वहां मेरे रिज़्क़ में भी बहुत बरकरत डाली।

ग़रीब किस तरह क़ुर्बानी करता है और फिर अल्लाह तआला पर भरोसा करता है और फिर किस तरह अल्लाह तआला इस भरोसा का मान रखता है। गिनी बसाऊ के मिशनरी साहिब एक घटना वर्णन करते हैं कि एक दोस्त मोंटेरो कुमारा (Monteiro Camara) साहिब को उनके वक़्फ़ जदीद के वादा की अदायगी के हवाले से ध्यान दिलाया गया तो कहने लगे कि मेरे पास इस वक़्त चार हज़ार फ्रॉंक सीफ़ा हैं जो मैंने आज के खाने के लिए रखे हुए थे। बहुत मामूली उस की क़ीमत है। उनके ख़ानदान भी बड़े होते हैं। उनके खाने के लिए चार हज़ार सीफ़ा रखे हुए थे। तो बहरहाल कहते हैं कुछ करता हूँ। कुछ देर के बाद उन्होंने वही रक़म चंदे में अदा कर दी जो खाने के लिए रखी थी और खाना खाने के लिए किसी से उधार ले लिया बल्कि उधार लेने के लिए चले गए। कहते हैं कि अगले दिन ही उनकी बेटी शहर से आई जो उनके लिए दो बोरियां चावलों की और एक डिब्बा तेल का और कुछ पैसे और दूसरी चीज़ें लेकर आई और उनको इस बात पर यक़ीन हो गया कि जो पैसे मैं ने अपने खाने के लिए रखे थे अल्लाह तआला ने इस में चन्दा देने की वजह से ऐसी बरकत डाली कि बेशुमार चीज़ें मुझे अगले दिन ही खाने के लिए मिल गईं अर्थात यह भूखे रह कर क़ुर्बानी करने वाले लोग हैं।

फिर एक और उदाहरण है अमीर साहिब फ्रांस ने ब्यान की है कि अल्लाह तआला ईमान को किस तरह बढ़ाता है। फ्रांस के एक अरब दोस्त हैं उन्होंने ब्यान किया कि मैंने वक़्फ़ जदीद का पिछ्ला, पिछले साल का मेरा ख़ुत्बा सुना जिस में मैंने माली क़ुर्बानी वालों के उदाहरण वर्णन किए थे जैसे आज कर रहा हूँ। कहते हैं इस ख़ुत्बे का मेरे पर बड़ा असर हुआ। उनकी 46 साल है। कहते हैं मैं बहुत माली मुश्किलों का शिकार था और पहले कभी मुझे इतनी माली तंगी का सामना नहीं करना पड़ा। बैंक से भी क़र्ज़ लेना पड़ा। बैंक वाले भी मेरे पीछे पड़े हुए थे कि क़र्ज़ वापस करो। मुझे वार्निंग मिल चुकी थी कि अगर मैंने अपना हिसाब साफ ना किया तो मेरा एकाऊंट बंद कर देंगे बल्कि कई बार फिर जुर्माना भी हो जाता है। इन्ही दिनों कहते हैं कि हमारे हलक़े में इज्लास आम हुआ। इज्लास से थोड़ी देर पहले ही मेरे एक दोस्त ने ज़बरदस्ती मुझे 20 यूरो दे दिए। मैं ने यह पैसे अपनी जेब में रख लिए कि अगले कुछ दिनों में मेरे काम आएँगे। और तो कुछ था नहीं मेरे पास। कहते हैं मैंने बीस यूरो रख लिए लेकिन जब मैं इज्लास पर गया तो वहां सैक्रेटरी माल ने जब चंदे की बात की तो मैंने वह बीस यूरो चंदे में दे दिए। कुछ दिन के बाद मुझे अपने बैंक से एक टेलीफ़ोन काल आई तो कहते हैं मुझे क्योंकि बुरी ख़बरें सुनने की आदत हो गई थी। हालात बहुत ख़राब हो रहे थे मैंने सोचा कि कोई बुरी ख़बर ही होगी। बैंक वालों ने अब मज़ीद कोई सख़्ती मुझ पर करनी है लेकिन बैंक वालों ने मुझे बताया कि सम्बन्धित इदारे ने उन्हें आर्डर किया है कि मेरा बैंक एकाऊंट बंद नाकिया जाए और जो छ: सौ यूरो की रक़म कमी में थी उनके एकाऊंट में इस को जमा कर दें, उस को जमा कर दें, क्रेडिट कर दें। कहते हैं मेरे लिए यह बड़ी हैरानी वाली बात थी क्योंकि बैंकों के रवैय्ये तो बड़े सख़्त होते हैं। कहते हैं कुछ ही दिन बाद मेरे काम की इंशोरंस ने मुझे एक बड़ी रक़म अदा कर दी जो एक समय से रुकी हुई थी। कहते हैं कि यह सारी घटनाएं वक़्फ़ जदीद का ख़ुत्बा सुनने और मामूली रक़म चंदे में देने के बाद पेश आईं। पहले मैं सोचा करता था कि मेरे साथ भी मोजज़ात हो सकते हैं? इन लोगों के मोजज़ात की बड़ी घटनाएं सुनाते रहते हैं। मेरे साथ तो नहीं कभी हुआ लेकिन अब अल्लाह तआला ने मुझे चंदे की बरकत का नमूना दिखाया है तो मुझे यक़ीन हो गया कि वास्तव में मोजज़ात होते हैं।

हेटी के मुबल्लिग़ क़ैसर साहिब लिखते हैं। यह भी अल्लाह तआला के सुलूक और ईमान मज़बूत करने की एक अन्य घटना है। अब यह घटनाए विभिन्न स्थानों की हैं, कोई अफ़्रीक़ा में है, कोई अमरीका में है, कोई यूरोप में है, कोई उत्तर में है, कोई पूर्व में है और आपस में उनका सम्पर्क और सम्बन्ध भी कोई नहीं लेकिन मिलती-जुलती घटनाए हैं। पोर्ट आफ़ प्रिंस के एक नए अहमदी इब्राहीम साहिब कुछ दिन पहले दफ़्तर से घर जा रहे थे। रास्ते में उनकी एक फाईल गिर गई जिसमें कई ज़रूरी काग़ज़ा और सनद और 13 हज़ार गोरद (gourde)की रक़म थी, उनके वहाँ जो वहां करंसी है। उन्होंने वापस जा कर सारा रस्ता चैक किया। उन्हें फाईल नहीं मिली। कहते हैं कि मैंने दिल में वादा किया कि मैंने वक़्फ़ जदीद का जो एक हज़ार गोरद का वादा किया था वह ज़रूर पूरा करूँगा। चाहे मेरे पास पैसे हों या ना हों।कहीं से ले के कर दूँगा। अत: मैंने किसी से क़र्ज़ लेकर वादा के अनुसार अपना चंदा अदा कर दिया। कहते हैं कि चन्दा दिया था तो उसी दिन शाम को जिस दिन चन्दा अदा किया किसी नामालूम व्यक्ति का फ़ोन आया कि आपकी फाईल मेरे पास है। मुझ से आकर ले जाएं। कहते हैं मैं फ़ौरन पहुंचा तो इस व्यक्ति ने मुझे फाईल पकड़ा दी और कहने लगा कि मुझे आपका पता तलाश करने के लिए फाईल अंदर से देखनी पड़ी थी इसलिए मैंने आपकी फाईल भी खोली है। आप अपनी रक़म और काग़ज़ात चैक कर लें। मैंने चैक किया तो सारी रक़म और काग़ज़ात फाईल में मौजूद थे। कहते हैं इस पर मैंने अल्लाह का शुक्र अदा किया और मुझे यक़ीन हो गया कि केवल चंदे की बरकत थी जिसकी वजह से मेरे गुम हुए काग़ज़ात जो ज़रूरी काग़ज़ात थे वे भी मुझे मिल गए और रक़म भी जिनका मिलना ज़ाहिर में मिलना मुश्किल था।

मुबल्लिग़ इंचार्ज गिनी कनाकरी कहते हैं कि कुण्डिया रीजन के एक गांव के एक अहमदी दोस्त अबूबकर साहिब को जब वक़्फ़ जदीद की अदायगी की तरफ़ तवज्जा दिलाई गई तो पहले तो उन्होंने कुछ टाल मटोल किया। फिर अपना वादा अदा कर दिया। चंदे की अदायगी के कुछ अर्से बाद उन्होंने हमारे लोकल मिशनरी को बताया कि जमाअत अहमदिया वास्तव में इलाही जमाअत है। वह ब्यान करते हैं कि मैं हुकूमत का मुलाज़िम हूँ और काफी समय हुआ मेरी एक टांग हादिसा में टूट गई थी जो कि मुनासिब मैडीकल सहूलत ना होने की वजह से सही तौर पर जुड़ ना सकी जिसकी वजह से मेरी एक टांग छोटी रह गई जिसकी मुझे निरन्तर तकलीफ़ रहती थी। अब कुछ अर्से से मैं पैसे जमा कर रहा था कि मुझे एक डाक्टर ने कहा था कि इस का ऑप्रेशन हो जाए तो यह ठीक हो सकती है। अत: इस बार कुछ पैसे जमा हो गए थे कि मैं अपनी टांग का ऑप्रेशन करवा लेता लेकिन जब

मिशनरी ने चंदे की तहरीक की तो मैंने सोचा कि इस बार चंदा रहने देता हूँ। नहीं देता और अपने ऑप्रेशन की रक़म रख लेता हूँ लेकिन फिर अल्लाह तआला ने मुझे हिम्मत दी। फिर मुझे ख़्याल आया कि नहीं अल्लाह पर भरोसा करते हुए सारी रक़म चंदे में अदा कर दी। वह ब्यान करते हैं कि अभी इस बात को दो दिन नहीं गुज़रे थे कि मेरे दफ़्तर की तरफ़ से मुझे ख़त आया कि मेरे ऑप्रेशन का सारा ख़र्च हुकूमत अदा करेगी और मैं जहां चाहता हूँ अपना ईलाज करवा सकता हूँ। और कहते हैं कि यह सिर्फ़ और सिर्फ चंदे की बरकत से ही हुआ है। अत: यह कोई इत्तिफ़ाक़ी बातें नहीं हैं। यह उन लोगों पर जो इस पर भरोसा करते हैं उनके ईमान को मज़बूत करने के लिए अल्लाह तआला के सुलूक हैं और इस में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त की भी दलील है।

कादियान से मामून रशीद साहिब सैक्रेटरी वक़्फ़ जदीद लिखते हैं कि एक साहिब हैं सोलेजा साहिब उनका इस साल चंदा वक़्फ़ जदीद कई घरेलू परेशानीयों की वजह से बक़ाया था। उनके भाई ने उनको इस बात की तरफ़ तवज्जा दिलाई कि अब साल का समाप्न है इस की जल्दी अदायगी करो लेकिन उनके एकाऊंट में इस क़दर रक़म नहीं थी कि सारा चंदा अदा कर सकें बल्कि सारी रक़म का सिर्फ तीस प्रतिशत ही एकाऊंट में मौजूद था। महोदय बड़े फ़िक्रमंद थे कि किस तरह सम्पूरण अदायगी करें। आख़िर जो रक़म एकाऊंट में थी वही उन्होंने चंदा अदा कर दी। वह ब्यान करते हैं कि अल्लाह तआला की तरफ़ से मोजज़ाना तौर पर चंद ही लम्हों में एकाऊंट में इतनी अधिक रक़म आ गई जिससे वह बक़ाया भी अदा कर सकते थे अत: उसी वक़्त उन्होंने वह रक़म अपने वादा के अनुसार अदा कर दी। कहते हैं कि हमेशा वादे साल के आरम्भ में पहले अदा कर दिया करते थे लेकिन इस साल उनकी और उनके बच्चे की बीमारी की वजह से बक़ाया रह गया था। वह इस बात से बड़े परेशान भी थे लेकिन अल्लाह तआला ने मोजज़ाना तौर पर इस का प्रबन्ध कर दिया और कहते हैं मेरे ईमान में यह मज़बूती का कारण बना।

इंडिया से ही अब्दुल महमूद साहिब इन्सपैक्टर वक़्फ़ जदीद हैं वह भी एक दोस्त की घटना ब्यान करते हैं। ज़िला बीरभूम के एक गांव, बंगाल का एक गांव है। इस की यह घटना है कि इन साहिब की किरयाने की होलसेल की दुकान है जो अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अच्छी चलती है। महोदय रोज़ाना दुकान खोलते ही सौ रुपया एक संदूक़ में बाक़ायदगी से डालते थे जिससे अपने वादा के अनुसार चंदे की अदायगी कर देते थे। सुबह आकर पहला काम यह करते थे कि एक बक्स में सौ रुपया डाल दिया। कहते हैं एक दिन उनकी दुकान में ख़रीदारी के लिए बहुत कम लोग आए और जो ख़र्च था वह पूरा नहीं हो रहा था। अगले दिन उन्होंने यह नहीं किया कि सौ रुपया ना डाले हों। अगले दिन दुकान खोलते ही महोदय ने सौ के बजाय तीन सौ रुपय इस संदूक़ में ,बक्स में डाल दिए और दिल में सोचा क्यों ना आज अल्लाह तआला के साथ सौदा किया जाए। अल्लाह तआला का करम ऐसा हुआ कि इसी दिन दोपहर के बाद कहते हैं मेरे पास आठ ख़रीदार आए। थोक का काम था और बड़ा कारोबार था। इस में वक़्त लगता है, बोरियां उठवाई होंगी। कहते हैं मैं इतना मसरूफ़ हो गया कि इस में से एक ख़रीदार को यह कह कर वापस भेजना पड़ा कि कल आ जाना और बाक़ी लोगों को सामान देते-देते रात देर हो गई और कहते हैं कि अल्लाह के फ़ज़ल से इस दिन काफ़ी कमाई हुई और कहते हैं कि अल्लाह तआला जब इन्सान पर ख़ुश होता है तो इतना देता है कि इन्सान दोनों हाथों से नहीं संभाल सकता।

गिनी बसाऊ ऊई(Oio) रीजन के मिशनरी अब्दुल अज़ीज़ साहिब हैं। कहते हैं एक वृद्ध बूढ़ी औरत मस्कोता (Mascuta) साहिबा हैं। उनको वक़्फ़ जदीद की अदायगी की तरफ़ तवज्जा दिलाई गई तो कहने लगीं कि मैंने वादा के अनुसार रक़म जमा कर के रखी हुई थी लेकिन कल रात अपने भाई की तरफ़ जा रही थी कि रास्ते में वह रक़म कहीं गुम गई है, गिर गई है। मैं वह रक़म तलाश कर रही हूँ। जैसे ही मुझे रक़म मिलेगी में अदायगी कर दूँगी। इस के बाद वह रक़म तलाश करती रहीं लेकिन कहीं नहीं मिली। इस पर उन्होंने अपनी बेटी से कुछ रक़म उधार लेकर वक़्फ़ जदीद में अदा कर दी और यह रक़म अदा करने के बाद उन्होंने दोबारा अपनी गिरी हुई थैली ढूढ़ने की कोशिश की। कहती हैं अभी मैं चंद मीटर दूर गई थी कि वही रक़म जो प्लास्टिक के एक लिफ़ाफ़े में बंद थी सड़क के बीच में पड़ी हुई मिल गई। इस पर बहुत ख़ुश हुईं और अगले दिन वापस आईं और अपने वादा के अनुसार अदायगी मुकम्मल की और फिर यह लोगों को बताने लगीं कि चंदे की, वक़्फ़ जदीद के चंदे की बरकत थी कि अल्लाह तआला ने उनको गुम हुई रक़म वापस दिला दी।

माली के रीजन सकासो के एक मुबल्लिग़ अहमद बिलाल साहिब लिखते हैं कि एक नए अहमदी अहमद जला साहिब मिशन हाऊस आए और उन्होंने बताया कि वह पहले बाक़ायदगी से चंदा अदा करते थे लेकिन फिर कुछ माली मुश्किलों की वजह से चंदा अदा नहीं कर पाए। एक रोज़ उन्होंने ख़्वाब में देखा कि वह लोग एक भीड़ के साथ एक बड़ा रास्ते पर चल रहे हैं और यह रास्ता आगे जा कर बहुत से रास्तों में बंट गया है लेकिन आगे तक़सीम होने वाले सारे रास्ते बहुत ख़राब और कठिन हैं। इस मौक़े पर उन्होंने दुआ की तो आसमान से एक सवारी आई जो उन्हें लेकर आसमान की तरफ़ चली गई और फिर जब ख़राब रास्ता ख़त्म हो गया तो इस सवारी ने उन्हें दुबारा चौड़े रास्ते पर उतार दिया। कहते हैं कि वहां उन्होंने एक बुज़ुर्ग को देखा जिन्हों ने उन्हें बताया कि यह सवारी तुम्हें तुम्हारे चंदे की अदायगी की वजह से लेने गई थी। कहते हैंकई बार मुश्किल आती हैं मगर एक अहमदी जो बाक़ायदगी से ख़ुदा की राह में चंदा देता है अल्लाह तआला मुश्किलों के वक़्त उनमें आसानी पैदा कर देता है। अत: इस नए अहमदी ने चंदा अदा किया और कहा कि आइन्दा चाहे कुछ भी हो जाए वह चंदे की अदायगी में कभी सुस्ती नहीं करेगा। क्या यह भी कोई इत्तिफ़ाक़ है।

तनज़ानिया के अमीर साहिब लिखते हैं कि अरूशा रीजन की एक जमाअत में चंदे की तहरीक की गई तो एक ग़रीब औरत फ़ातिमा साहिबा जो केले और फल बेच कर गुज़ारा करती हैं उन्होंने दो दिन की समस्त आय वक़्फ़ जदीद में अदा कर दी और अपनी फ़ैमिली को भी बाक़ायदा वक़्फ़ जदीद में शामिल करवाया। इसी तरह जमाअत की एक और वृद्ध औरत हैं उनको भी तहरीक की गई तो अगले दिन सुबह आठ बजे ख़ुद मिशन हाऊस आएं और पाँच हज़ार शलंग वक़्फ़ जदीद में अदा किए। अब ये वे लोग हैं (जिनके बारे में) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि हैरत होती है इन लोगों को देखकर कि किस तरह क़ुर्बानियां करते हैं।(उद्धिरत ज़मीमा रिसाला अन्जाम आथम रूहानी ख़ज़ायन भाग11 पृष्ठ313 हाशिया) और तवज्जा दिलाने पर जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तवज्जा दिलाई जाए तो ये लोग क़ुर्बानी भी करते हैं

तनज़ानिया के अमीर साहिब ने ही एक और घटना लिखी है कि पिछले सालों से देश के आर्थिक हालात निहायत तंग हैं लेकिन अहमदी बहुत इख़लास से माली क़ुर्बानी में हिस्सा लेते हैं। अरूशा शहर के एक दोस्त वज़ीरी साहिब जो कि अख़बार बेच कर अपना गुज़ारा करते हैं। उनको जब वक़्फ़ जदीद के हवाले से तहरीक की गई तो उन्होंने तौफ़ीक़ के अनुसार अदायगी की और साथ ही कहने लगे कि मैं आइन्दा से रोज़ाना एक कप चाय का ख़र्च कम कर के वह रक़म चंदे में अदा करूँगा। अब ग़रीब आदमी इस तरह भी पैसे बचाते हैं कि एक प्याली चाय की नहीं पियूँगा और इस का जो ख़र्च है वह चंदे में अदा करूँगा। यह एहसास है कि किस तरह अल्लाह तआला का क़ुरब पाना है।

अमीर साहिब तनज़ानिया ही लिखते हैं कि मारा रीजन की जमाअत के एक

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

मुख़लिस नौजवान हैं। प्राय यह वक़्फ़ जदीद का साल ख़त्म होने से पहले ही सम्पूर्ण अदायगी कर देते हैं लेकिन इस साल आर्थिक हालात की तंगी की वजह से अभी पंद्रह हज़ार शलंग उनके बक़ाया थे। उनके पास मामूली रक़म थी। शिलंग की भी कोई वैल्यू नहीं। बहुत कम वैल्यू है। उन्होंने हिसाब लगाया कि महीने के अन्त पर अगर ये रक़म भी चंदे में अदा कर दी तो उनके पास खर्चों के लिए कुछ भी बाक़ी नहीं रहेगा। बहरहाल उन्होंने अल्लाह पर भरोसा कर के ये रक़म चंदे में अदा कर दी। ब्यान करते हैं कि अगले दिन ही उनके दफ़्तर से फ़ोन आया कि पिछले तीन माह से उनके कुछ बकाया हैं वे क्लीयर हो गए हैं और इसी तरह नए साल में उनकी तनख़्वाह में भी बहुत वृद्धि हुई है। उनका भी यह ईमान है कि चंदे की बरकत से ही कुछ दिनों में मुझे छः गुना ज़्यादा रक़म मिल गई। कहाँ यह हालत थी कि घर का ख़र्चा किस तरह चलेगा और कहाँ यह हालत कि अल्लाह तआला ने छः गुना ज़्यादा रक़म दे दी

बुर्कीना फासो के काया रीजन के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि एक अहमदी अबदो साहिब हैं वह बताते हैं कि चंदों की अदायगी में हिस्सा तो लेता था मगर बाक़ायदा नहीं था। पिछले साल मैंने इरादा किया कि आइन्दा में चंदे के समस्त विभागों में शामिल होने की भरपूर कोशिश करूँगा। कहते हैं कि जब से मैं ने फ़ैसला किया है अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मैं चंदा की अदायगी में बाक़ायदा हूँ और जब से मैं बाक़ायदा हुआ हूँ मेरे समस्त मामले, मेरे माल, मेरे मवेशी, फ़सल हर चीज़ में बरकत शुरू हो गई है। अतः यह कि कई एक मुश्किलें थीं जिनकी वजह से मैं काफ़ी परेशान था वह भी धीरे धीरे हल हो गई हैं। कहते हैं कि अभी पिछले माह ही मेरी बीवी गर्भवति थी और हस्पताल के खर्चों के लिए मेरे पास पैसे नहीं थे मगर जब डलिवरी का वक़्त आया तो अल्लाह तआला ने ग़ैब से मदद की और सारा इंतिज़ाम हो गया और उनके यहाँ बच्ची पैदा हुई और बीवी भी ख़ैरीयत से है। कहते हैं यह सब कुछ मैंने देखा है और मैं यही सोचता हूँ कि चंदे की बरकत से हुआ है

फिर रशिया के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि बदाया अदुवारद साहिब आर्मेनियन हैं लेकिन रशिया में रहते हैं। उन्हें काफ़ी अध्ययन और सोच बिचार के बाद अहमि-दयत क़बूल करने की तौफ़ीक़ मिली। अहमिदयत क़बूल करने के साथ ही उन्हें जमाअत में माली क़ुर्बानी के निज़ाम से परिचित करवाया गया। इस के बाद उन्होंने बाक़ायदा हर महीने चंदा वक़्फ़ जदीद और तहरीक जदीद अदा करना शुरू कर दिया। काम के सिलसिला में देश के अंदर भी और देश से बाहर भी काफ़ी सफ़र करते हैं लेकिन सफ़रों में रहने के बावजूद बाक़ायदगी से चंदा अदा करते हैं। उनका छोटा मोटा काम है यह नहीं कि कोई बहुत हैसियत वाले हूं इसलिए सफ़र करते हैं।

अदवारदो ब्यान करते हैं कि जनवरी 2020 ई में अपने काम के सिलसिले में उन्होंने आर्मीनीया जाना था और वहां से ज़ान जाना था। यह काम बहुत ज़रूरी था लेकिन उनके पास सफ़र के खर्चों के लिए मुनासिब रक़म उपलब्ध नहीं थी। परेशानी भी थी दुआ भी कर रहे थे। कहते हैं 30 दिसम्बर वाले दिन एक ऐसी कंपनी से उनके एकाऊंट में रक़म आई जिसने यह रक़म उन्हें फरवरी में अदा करनी थी। यह कहते हैं कि उनके इलावा और भी लोग हैं जिन्हें ये रक़म फरवरी में मिलनी है लेकिन सिर्फ उनको ये रक़म फरवरी के बजाय दिसम्बर में अदा कर दी गई और यह उनका यक़ीन है कि यह सिर्फ़ और सिर्फ चंदे की बरकत है वर्ना यह बात समझ से परे है कि इतने लोगों में से ये रक़म सिर्फ मुझे तीस दिसम्बर को क्यों दी गई। और वह इस से अधिक लिखते हैं कि अल्लाह तआला के सुलूक और प्यार का अंदाज़ा सिर्फ एक अहमदी मुस्लमान को ही हो सकता है। इस तरह भी अल्लाह तआला ईमान मज़बूत करता है।

इवरीकोस्ट से सान पेद्रो रीजन के मुबल्लिग़ वक़ार साहिब लिखते हैं कि यहां पेद्रो रीजन में 2014 ई में फ़तहा करो गांव में बीस लोगों पर आधारित एक छोटी सी जमाअत क़ायम हुई थी और यहां एक साहिब थे जारा साहिब। उनका पीछे से सम्बन्ध बुर्कीना फासो से था। इस जमाअत के एक सक्रिय मैंबर यही थे और एक साल हो गया। वह बुर्कीना फासो वापस चले गए थे। उनके वापस जाने पर काफ़ी परेशानी थी क्योंकि बाक़ी लोग इस क़दर सक्रिय नहीं थे। उनकी तर्बीयत की भी ज़रूरत थी। बहरहाल उनके बेटे ईसा जारा जो कि शादीशुदा हैं और खेती करते हैं उनसे सम्पर्क किया गया उन्हें ख़ुद्दामुल अहमिदया के नैशनल इज्तिमा पर जाने के लिए तैय्यार किया गया। उन्हें चंदे की एहमीयत और बरकतों और निज़ाम जमाअत के साथ पुख़्ता सम्बन्ध रखने और दुआ करते रहने के लिए कहा गया। कहते हैं उस के बाद दिसम्बर में नैशनल जलसा सालाना से पहले महोदय मेरे पास आए और दस हज़ार फ्रॉंक सेफ़ा की रक़म चंदा में अदा कर दी। इस पर मैंने उन्हें हैरान हो कर कहा क्योंकि ज़ाहिर में उनके हालात के अनुसार बहुत ज़्यादा थी कि ये रक़म आप ने किस तरह दे दी? इस पर उन्होंने बताया कि जब से मैंने चंदा अदा करना शुरू किया है मुझ पर ख़ुदा तआला के बेशुमार फ़ज़ल हो रहे हैं। मुझे मेरे खेत से दूसरों की निसबत ज़्यादा लाभ हासिल हो रहा है। कुछ समय पहले मैंने ख़्वाब में देखा कि एक बुज़ुर्ग जो नूरानी चेहरे वाले हैं लोगों को ख़ैर के रास्ते की तरफ़ बुला रहे हैं। यह कहते हैं कि यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम थे जो कि दुनिया को हिदायत की तरफ़ बुला रहे हैं। ख़ुदा तआला का शुक्र है कि मुझे जमाअत अहमदिया में दाख़िल होने की तौफ़ीक़ मिली और कहते हैं अब मैं बाक़ायदा चन्दा अदा करूँगा।

इंडिया से इन्सपैक्टर वक़्फ़ जदीद हैं उन्होंने बारह साल की एक बच्ची का ज़िक्र किया है कि वह कई साल से बाक़ायदगी से वक़्फ़ जदीद का चन्दा देती है और एक थैली में पैसे जमा करती रहती है। ना वह बोल सकती है न सुन सकती है लेकिन जो भी इस को रक़म मिले वह जब दूसरों को चन्दा देते देखती है तो इस को भी शौक़ पैदा हुआ।

इसी तरह लाइबेरिया से एक मुबल्लिग़ साहिब लिखते हैं कि कैप माऊंट काओनटी की एक जमाअत है इस में मग़रिब इशा के बाद जमाअत के लोगों को मैंने वक़्फ़ जदीद के चंदे के हवाले से तहरीक की तो लोगों ने आदत के अनुसार बारी बारी अपना और अपने फ़ैमिली मैंबर का चन्दा अदा करना शुरू कर दिया। इसी दौरान दो छोटे लड़के अज़ीज़म सुलेमान और अज़ीज़म अब्दुल्लाह कुमारा मस्जिद से उठकर चले गए और कुछ देर के बाद दोनों वापस आए और बीस बीस लाइबेरीन डालर चन्दा अदा कर दिया। कहते हैं क्योंकि उमूमन वहां माता पिता बच्चों का चन्दा देते हैं इसलिए मुझे ख़्याल आया कि इन बच्चों से पूछूँ कि उन्होंने अपना चन्दा ख़ुद क्यों दिया है। इस पर दोनों बच्चे कहने लगे कि हमें यह पता चला था कि ख़लीफ़ा वक़्त का ये इरशाद है कि बच्चे भी वक़्फ़ जदीद में शामिल हों। इसलिए हमने सोचा कि अब हम ख़लीफ़तुल मसीह के इरशाद के अनुसार पैसे जमा करके ख़ुद अपना चन्दा अदा करेंगे। दूर दराज़ के इलाक़े में बैठे हुए बच्चे जिन्होंने कभी वक़्त के ख़लीफ़ा को देखा भी नहीं लेकिन अब ये इख़लास और सम्बन्ध है जो सिर्फ और सिर्फ ख़ुदा तआला ही उनके दिलों में पैदा कर सकता है। अल्लाह तआला इन लोगोंके इख़लास तता वफ़ा को और अधिक बढ़ाए। अतः बच्चे हैं या बड़े, नई बैअत करने वाले हैं या पुराने अहमदी उनको ये इदराक हासिल है कि अल्लाह तआला की मुहब्बत को पाने का एक माध्यम उस की राह में ख़र्च करना है और फिर कई की तो ख़ुदा तआला ख़ुद रहनुमाई भी करता है जैसे मैंने घटनाओं में भी बताया। ये लोग ऐसे हैं जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश के अनुसार ख़ुदा तआला की राह में ख़र्च कर के रशक के योग्य कहलाने वाले हैं।

अब मैं वक़्फ़ जदीद के हवाले से पिछले साल के दौरान जो वक़्फ़ जदीद के चंदे की क़ुर्बानियां हुई हैं उनकी रिपोर्ट पेश करूँगा और नए साल का ऐलान भी (करूँगा) अल्लाह तआला के फ़ज़ल से वक़्फ़ जदीद का 62 वां साल31 दिसम्बर को ख़त्म हुआ और नया साल 1 जनवरी से शुरू हो गया है। इस दौरान में वक़्फ़ जदीद में सारी दुनिया की जमाअत अहमदिया को छयानवे लाख तैंतालीस हज़ार पाऊंडज़ की माली क़ुर्बानी पेश करने की तौफ़ीक़ मिली। पिछले साल से यह रक़म पाँच लाख पाऊंडज़ अधिक है।

इस साल बर्तानिया दुनिया की जमाअतों में मजमूई तौर पर वसूली के लिहाज़ से नम्बर एक है और इस तरह तफ़सील यूं है कि बर्तानिया नम्बर एक है। फिर पाकिस्तान है, फिर जर्मनी है, फिर अमरीका, फिर कैनेडा, फिर भारत, आस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया और फिर मिडल ईस्ट की दो जमाअतें हैं। अमीर साहिब ने कहा था वक़्फ़ जदीद में बढ़ जाऐंगे। उन्होंने अपना कहना पूरा कर ही दिया।

दस बड़ी जमाअतें जिनका पिछले साल की निसबत मुक़ामी करंसी में काफ़ी इज़ाफ़ा हो है उनमें इंडोनेशिया नम्बर एक है। फिर जर्मनी है। फिर अमरीका है। इस के बाद दूसरी जमाअतें हैं बहरहाल तीन बड़ी जमाअतें ये हैं। भारत ने भी काफ़ी, वृद्धि की है और कैनेडा, बर्तानिया और मिडल ईस्ट की जमाअतें और पाकिस्तान और आस्ट्रेलिया की निसबत भारत की स्थानीय करंसी में क़ुर्बानी का जो इज़ाफ़ा है वह इन देशों से ज़्यादा है। इस लिहाज़ से पांचवें नम्बर पर भारत है।

और अफ़्रीक़ा में मजमूई वसूली के लिहाज़ से नुमायां जमाअतें जो हैं उनमें नम्बर एक घाना है। नम्बर दो नाईजीरिया। नम्बर तीन बुर्कीना फासो। नम्बर चार तनज़ानिया। नम्बर पाँच बेनिन। नम्बर छः गेम्बिया। नम्बर सात कीनिया । नम्बर आठ माली। नम्बर नौ सैर इलैवन और दस कांगो कंसाशा

शामिल होने वालों की संख्या के लिहाज़ से इस साल अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जो वक़्फ़ जदीद के चंदे में शामिल हुए हैं। उनकी संख्या अठारह लाख इक्कीस हज़ार है और इस साल उनकी वृद्धि 89 हज़ार है। eighty-nine thousand की वृद्धि हुी है और संख्या में इस साल इज़ाफ़े के लिहाज़ से नुमायां जमाअतों में कैमरोन नम्बर एक पर है। फिर सेनेगाल है। फिर सैरालियोन है। फिर नाईजीरिया है। फिर बुर्कीना फासो है। फिर इंडोनेशिया और फिर इस तरह बाक़ी जमाअतें हैं।

मजमूई वसूली के लिहाज़ से बर्तानिया की दस बड़ी जमाअतें ये हैं नम्बर एक इस्लामाबाद, नम्बर दो आलडरशाट, नम्बर तीन वोस्टर पार्क, फिर बर्मिंघम साउथ, फिर मस्जिद फ़ज़ल। फिर पुटनी, फिर जलंघम, फिर न्यू मोल्डन, फिर बर्मिंघम वैस्ट और हाओंसलो नॉर्थ। और क्षेत्र के लिहाज़ से पहले पाँच क्षेत्र हैं: बयतुल फ़तूह क्षेत्र नम्बर एक पर। फिर मस्जिद फ़ज़ल रीजन। फिर मिडलैंड रीजन, इस्लामाबाद रीजन, फिर बैयतुल अहसान रीजन, दफ़्तर इतफ़ाल के लिहाज़ से पहली दस जमाअतें आलडर शॉट नम्बर एक पर, फिर रोहमपटन, फिर पुटनी, इस्लामाबाद, मिचम पार्क, फिर चीम, फिर लेमंगटन सपा,फिर वोस्टर पार्क, फिर रेनज़ पार्क, सरबटन।

पाकिस्तान में चन्दा बालिग़ान की जो पहली तीन जमाअतें हैं उनमें अव्वल लाहौर है। फिर रब्वह है। फिर तृतीय कराची है। पाकिस्तान करंसी की वैल्यू की वजह से पीछे चला गया है। अगर पिछले साल जितनी उस की करंसी की वैल्यू होती तो इस बार पाकिस्तान फिर नम्बर एक पर ही होना था। बर्तानिया का इतना ज़्यादा कमाल भी नहीं है। चंदा बालिग़ान में जो पाकिस्तान के ज़िला हैं उनमें इस्लामाबाद ,स्यालकोट, रावलपिंडी ,गुजरांवाला, मुल्तान, उम्रकोट, हैदराबाद, डेरा ग़ाज़ी ख़ान, मीरपुर ख़ास और पेशावर, मजमूई वसूली के लिहाज़ से पहली दस जमाअतें हैं इस्लामाबाद शहर, टाउन शिप लाहौर, डीफ़ैंस लाहौर, दारुल ज़िकर लाहौर ,गुलशन इक़बाल कराची ,सुमन आबाद लाहौर, रावलपिंडी शहर, अज़ीज़ आबाद कराची,गुलशन जामी कराची और दिल्ली गेट लाहौर।

वहां तो हर तरह के हालात ख़राब हैं उस के बावजूद अल्लाह के फ़ज़ल से वहां भी बड़ी क़ुर्बानियां देने वाले लोग हैं। दफ़्तर इत्फ़ाल में पाकिस्तान की तीन बड़ी जमाअतें जो हैं अव्वल लाहौर, द्वित्तीय कराची और तृतीय रब्वह और ज़िलों की पोज़ीशन्ज़ इस तरह है स्यालकोट नम्बर एक ,गुजरांवाला नम्बर दो ,फिर सरगोधा, फिर हैदराबाद, फिर डेरा ग़ाज़ी ख़ान,फिर शेख़ूपूरा। फिर मीरपुर ख़ास, फिर उम्र-कोट, फिर ओकाड़ा, फिर पेशावर।

वसूली के लिहाज़ से जर्मनी की पाँच लोकल जमाअतें, लोकल इमारतें ये हैं नम्बर एक हैमबर्ग, नम्बर दो फ्रैंकफ़र्ट, नम्बर तीन डटसन बाख, नम्बर चार ग्रोस गैराओ और नम्बर पाँच वेज़ बादिन। चंदा बालिग़ान में वक़्फ़ जदीद में पहली दस जमाअतें नवीस , रोडर मार्क , नेडा , महदी आबाद , फ्लोर्स हाइम , फ्रेड बर्ग , बेनज़हायम , लांगन , कोबलनज़ , हनाओ और पुनी बर्ग हैं। दफ़्तर इतफ़ाल में पहले पाँच रीजन हैं, हैसन साउथ ईस्ट (सूदा वेस्ट)है। हैसन मिटे। ताउनस। पैसन साऊथ और राइन लैंड फ़लज़। बहरहाल जो भी उनके नाम हैं जर्मन ख़ुद ही सुदार कर लें।

वसूली के लिहाज़ से अमरीका की दस जमाअतें मेरी लैंड नम्बर एक, फिर सेलेकोन वैली, फिर लास ऐंजलिस, फिर हीवसटन, फिर सेंट्रल वर्जीनिया, फिर सेइटल, फिर डेट्रॉइट, फिर साउथ वर्जीनिया, फिर शिकागो,फिर नॉर्थ वर्जीनिया।

वसूली के लिहाज़ से कैनेडा की इमारतें वान नम्बर एक पर, कैलगरी नम्बर दो पर, पीस विलेज नम्बर तीन। वेनकोवर नम्बर चार। मिसी सागा नम्बर पाँच और बड़ी जमाअतें डरहम, ब्रैडफोर्ड, ऐड मनटुन वैस्ट, मिल्टन वैस्ट, हैमिल्टन माओंटेन, ओटवा ईस्ट और ओटवा वैस्ट। एयर डरी (Airdrie) वेनी पैग और ऐबटस फ़ोर्ड हैं

और दफ़्तर इतफ़ाल की पाँच नुमायां इमारतें हैं वागन, मेरा ख़्याल है वान होगा उन्होंने उर्दू में इस को वागन बना दिया है और कैलगरी। फिर पीस विलेज। फिर वैस्टन। ब्रैम्पटन वैस्ट। दफ़्तर इत्फ़ाल की पाँच नुमायां जमाअतें डरहम, ब्रैडफोर्ड, मिल्टन वैस्ट, और अरडरी (Airdrie) हमिल्टन माओंटेन हैं

भारत के प्रान्त जो हैं उनमें केरला नम्बर एक पर है, जम्मू कश्मीर नम्बर दो पर, बावजूद ख़राब हालात के यह नम्बर दो पर है। कर्नाटक नम्बर तीन। फिर तामिल-नाडू। फिर तेलंगाना। फिर उडीशा। फिर पंजाब। फिर वैस्ट बंगाल। फिर दिल्ली। फिर उतर प्रदेश। और वसूली के लिहाज़ से भारत की जो जमाअतें हैं उनमें पत्तिपरम नम्बर एक पर, फिर कादियान नम्बर दो, फिर हैदराबाद, फिर कालीकट, फिर बैंगलौर, कोयमबाटूर,कोलकत,कैरोलाई। कैराइंग। पैंगा डी (Payangadi)

आस्ट्रेलिया की दस जमाअतें नम्बर एक पर मैलबोर्न लॉंग वार्न, कासल हिल, मैलबोर्न बेरोक, मारसिडन पार्क, एडीलेड साउथ, MT डरोइट (Druitt) पीनरिथ (Penrith) ब्लैक टाउन। कैनबरा। पर्थ (Perth) इत्फ़ाल में आस्ट्रे-लिया में मलबर्न लॉंग वार्न, एडीलेड साउथ, मेलबर्न और MT डरोइट और पीनरिथ और लोगन ईस्ट, पर्थ और मारसिडन पार्क, कासल हिल और फिर लोगन वैस्ट हैं। बालिग़ान में आस्ट्रेलिया की जमाअतें कासल हिल, मेलबर्न लॉंग वार्न, मारसिडन पार्क, मेलबर्न बेरोक, MT डरोइट, ब्लैक टाउन, एडीलेड साउथ, पीनरिथ, कैनबरा और पर्थ हैं।

यहां भी आजकल आग ने तबाही मचाई हुई है। अल्लाह तआला उन लोगों पर भी रहम करे और ये लोग हक़ीक़त में अपने पैदा करने वाले को पहचानने वाले भी हूँ। बहरहाल इस के बावजूद अहमदी वहां अल्लाह के फ़ज़ल से क़ुर्बानियां दे रहे हैं। अल्लाह तआला दुनिया में समस्त क़ुर्बानी करने वालों के मालों तथा नफ्सों में बे-इंतिहा बरकत प्रदान फ़रमाए।

पाकिस्तान के हालात जैसा कि मैं ने कहा कि मआशी लिहाज़ से ख़राब हो रहे हैं। इसी वजह से करंसी की वैल्यू कोई नहीं और इसलिए पोज़ीशन भी उनकी पीछे चली गई। इस के बावजूद क़ुर्बानी में यह कमी नहीं करते। इसी तरह स्यासी हालात भी ख़राब हैं जिसका असर मआशी हालात पर भी पड़ रहा है। फिर उस क्षेत्र में भारत पाकिस्तान का तनाव बढ़ रहा है। भारत में अंदरूनी तौर पर भी ख़बरों के अनुसार हालात काफ़ी ख़राब हैं और दुनिया की प्राय हालत भी ऐसी है कि लगता है कि ये सब अपनी तबाही को आवाज़ दे रहे हैं। मिडल ईस्ट के हालात भी अब ख़राब हो रहे हैं। ईरान और अमरीका और इस्राईल की जंग का ख़तरा बढ़ रहा है। मुस्लमान देशों में आपस में इत्तिहाद नहीं है। अत: दुनिया के तबाही से बचने और ख़ुदा की तरफ़ आने के लिए हमें बहुत दुआ करनी चाहिए। अल्लाह तआला अपना फ़ज़ल करे और उनको अक़ल और समझ दे।

नया साल शुरू हुआ है। हम एक दूसरे को मुबारकबादें दे रहे हैं लेकिन अंधेरे गहरे होते चले जा रहे हैं। अत: इस साल के बरकतों वाला होने के लिए ज़रूरी है कि हम अल्लाह तआला के हुज़ूर यह दुआ करें कि अल्लाह तआला इस साल को इस तरह बरकत वाला फ़रमाए कि दुनिया की हुकूमतें अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए दुनिया को तबाही की तरफ़ ना ले जाएं बल्कि दुनिया में अमन और इन्साफ़ क़ायम करने वाली हूँ। अपनी ज़ाती अनाओं में पड़ कर अपने देश के स्वार्थों को हासिल करने के लिए इन्सानियत को तबाह करने के वाले न हों। अल्लाह तआला उनको अक़ल दे। मुस्लमान देश हैं तो वे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम और मसीह मौऊद और महदी मौऊद के साथ जुड़ कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे को दुनिया में लहराने में मददगार बनें और ये लोग तौहीद को दुनिया में क़ायम करने वाले हों ना कि मसीह मौऊद की मुख़ा-लिफ़त में इतने बढ़ जाएं कि अब तो इंतिहा कर दी है। अल्लाह तआला हमें भी तौफ़ीक़ दे कि हम पहले से बढ़कर ज़माने के इमाम को मानने का हक़ अदा करने वाले हों और यह हक़ अदा करते हुए दुनिया में तौहीद का झंडा लहराने वाले हों और दुनिया को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे के नीचे लाने वाले हों और इस के लिए अपनी समस्त सलाहियतों और संसाधनों को इस्तिमाल करने वाले हों। अगर हम यह सोच नहीं रखते और इस सोच के साथ दुआएं नहीं करते और अपनी दुआओं के साथ नए साल में दाख़िल नहीं होते तो हमारे नए साल की मुबारक बादें सतही मुबारक बादें हैं जिनका कोई लाभ नहीं।

अत: नए साल की हक़ीक़ी मुबारकबाद हम पर जो ज़िम्मेदारी डाल रही है इस का हर अहमदी बड़े छोटे मर्द औरत को एहसास होना चाहिए और इस के लिए अपनी समस्त कोशिशों और सलाहीयतों को इस्तिमाल करना चाहिए और अपनी दुआओं में और ख़ुदा तआला से सम्बन्ध में एक ख़ास कैफ़ीयत पैदा करने की हमें कोशिश करनी चाहिए। तभी हम इस साल की हक़ीक़ी बरकतें हासिल करने वाले हो सकेंगे। अल्लाह तआला हमें उस की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 24 जनवरी 2020 पृष्ठ 5 से 10)

☆ ☆

☆

शेष पृष्ठ 7 पर

बैयतुस्सबूह में पधारने के बाद जैसे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कार से बाहर पधारे तो फ्रैंकफ़र्ट शहर और इस के इर्दगिर्द की जमाअतों और जर्मनी भर के विभिन्न शहरों से आए हुए जमाअत के लोग मर्द तथा औरतें और बच्चों, बच्चियों ने बड़े जोश से अपने प्यारे आक़ा का स्वागत किया। अक़ीदत और मुहब्बत से हर तरफ़ हाथ बुलंद थे और अहलन व सहलन व मर्हबा की आवाज़ें बुलंद हो रही थीं।

एक तरफ़ लोगों बड़े पुरजोश अंदाज़ में अपने आक़ा को ख़ुश-आमदीद कह रहे थे तो दूसरी तरफ़ बच्चे और बच्चियां विभिन्न ग्रुपस की सूरत में स्वागत गीत और दुआइया नज़्में पढ़ रही थीं। औरतें दर्शन से लाभान्वित हो रही थीं। आदरणीय इदरीस अहमद साहिब लोकल अमीर फ्रैंकफ़र्ट, आदरणीय हैदर अली ज़फ़र साहिब नायब अमीर जर्मनी, आदरणीय इमतियाज़ शाहीन साहिब मुबल्लिग़ फ्रैंकफ़र्ट और आदरणीय मुबारक जावेद साहिब जनरल सैक्रेटरी लोकल इमारत फ्रैंकफ़र्ट ने हुज़ूर अनवर को ख़ुश-आमदीद कहते हुए हाथ मिलाया।

अपने प्यारे आक़ा का स्वागत करने वाले ये लोगों फ्रैंकफ़र्ट शहर के विभिन्न हिस्सों के इलावा Rsselsheim Raunheim,Eschborn, Bad Vilbel, Butzbach, Mrfelden, Steinheim, Usingen, Oberussel BadHomburg, Mannheim, Kassel,Fulda,Karlsruhe, Darmstadt, Rdesheim,Hanau,Friedberg वेज़ बादिन, गीज़न , हाईडल बर्ग से आए थे

अपने आक़ा के स्वागत के लिए आने वाले कुछ लोग और फ़ैमिलीज़ बड़े लंबे सफ़र तय करके पहुंचे थे। कोलोन से वाले लोग 200 किलोमीटर,Dortmund औरDsseldorf से आने वाले 250 किलोमीटर,Aachen और Hannover से आने वाले 300 किलोमीटर, जबकि हिमबर्ग से आने वाले 550 किलोमीटर और बर्लिन से आने वाले छः सौ किलोमीटर का लंबा सफ़र तय करके पहुंचे थे

जलसा सालाना जर्मनी में शामिल होने के लिए बाहरी देशों से मेहमानों और वफ़ूद के आने का सिलसिला जारी है। अब तक रशिया, किर्गीज़स्तान, बोरकीना फासो, माली,कांगो, सेरालियून, नाईजर, गाना, नाईजीरिया, बेनिन, अल्बानिया, सेनेगाल, इंडोनेशिया और कुछ पूर्वी यूरोप के देशों से कुछ मैंबर और वफ़ूद जर्मनी पहुंच चुके हैं और ये सब अपने प्यारे आक़ा का स्वागत करने वालों में शामिल थे। हुज़ूर अनवर का स्वागत करने वालों की संख्या दो हज़ार तीन थी।

10 बजकर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाऐं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के स्वागत के लिए जर्मनी की विभिन्न जमाअतों से जो मर्द तथा औरतें पहुंचीं थीं इन सभी ने अपने प्यारे आक़ा के अनुकरण में नमाज़ मग़रिब तथा इशा अदा करने की सौभाग्य पाई। उनमें से एक बड़ी संख्या ऐसे ख़ुशनसीब लोगों और नौजवानों की थी जो पिछले एक साल के दौरान पाकिस्तान से हिजरत करके किसी माध्यम से यहां पहुंचे थे और उनकी ज़िन्दगी में प्यारे आक़ा के अनुकरण में यह पहली नमाज़ थी। ये सभी लोग अपनी इस ख़ुशनसीबी और सौभाग्य पर बेहद ख़ुश थे और उन इंतिहाई मुबारक लम्हों से लाभान्वित हो रहे थे जो उन की ज़िन्दगियों में पहली बार थे।

अल्लाह तआला ये बरकतें और सौभाग्यें हम सब के लिए मुबारक करे और हमारी अगली नस्लें और औलादें भी इन इनामों से हमेशा लाभान्वित होती रहें आमीन।

03 जुलाई 2019 ई (दिनांक बुधवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 4 बजकर 15 मिनट पर तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्तता रही। हुज़ूर अनवर ने दफ़्तरी डाक , ख़त और रिपोर्टस मुलाहिज़ा फ़रमाएं और हिदायतों से नवाज़ा।

फ़ैमिली मुलाक़ातें

प्रोग्राम के अनुसार 11 बजे हुज़ूर अनवर अपने दफ़्तर पधारे और फ़ैमिलीज़ मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज सुबह के इस सैशन में 35 फ़ैमिलीज़ के121 मर्दों और 38 औरतें ने व्यक्तिगत तौर पर अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात की सौभाग्य पाई। मुलाक़ात करने वाली ये फ़ैमिलीज़ जर्मनी की विभिन्न 23 जमाअतों और इलाक़ों से आई थीं।

इस के इलावा पाकिस्तान, चाड, कांगो, माली , घाना, तनज़ानिया, क़तर, बोरकीना फासो, गेम्बिया , सेनेगाल, मारीशस, पुर्तगाल , इंडोनेशिया और सऊदी अरब से आने वाले लोगों और फ़ैमिलीज़ ने भी मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। जर्मनी की विभिन्न जमाअतों से आने वाले लोगों और फ़ैमिलीज़ में से कुछ बड़े लंबे सफ़र तय कर के अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात के लिए थे। Bielefeld से आने वाले 260 किलोमीटर ,Aachen से आने वाले 265 किलोमीटर और Munchen से आने वाले 400 किलो मीटर, जबकि हिमबर्ग से आने वाले 500 किलोमीटर और बर्लिन से आने वाले लोगों और फ़ैमिलीज़ 530 किलो मीटर का लंबा सफ़र तय कर के मुलाक़ात के लिए हाज़िर हुई थीं।

मुलाक़ात करने वाले इन सभी लोगों और अफ़राद ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने की सौभाग्य पाई। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम दोपहर 1 बजकर 40 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए अपनी रिहायश पर तशरीफ़ ले गए। दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा प्रभाव जमा कर के पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। पिछले-पहर भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्त रहे

सामूहिक मुलाक़ात

प्रोग्राम के अनुसार 6 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के हाल में पधारे जहां दौरान साल विभिन्न माध्यमों से पाकिस्तान से जर्मनी पहुंचने वाले लोगों और नौजवानों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाक़ात का प्रोग्राम था। इन नौजवानों की सामूहिक संख्या 200 से अधिक थी और ये जर्मनी की विभिन्न जमाअतों से मुलाक़ात के लिए पहुंचे थे। आज ये सब अपनी ज़िन्दगी में पहली बार अपने प्यारे आक़ा के दर्शन से लाभान्वित हो रहे थे। ये सभी वे लोग थे जो अपने ही देश में , अपने ही हम वतनों के ज़ुलम से सताए हुए थे और अपने घरबार और अज़ीज़ तथा रिश्तेदारों को छोड़कर अल्लाह की रज़ा पर राज़ी रहते हुए हिजरत करके इस देश में आ गए थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने बारी बारी हर एक को शरफ़ हाथ मिलाते प्रदान फ़रमाया और कुछ से पूछा कि कहाँ से , किस जमाअत से आए हैं। कइयों से उनके इसाईलम केसिज़ के बारे में भी पूछा। ये नौजवान भी अपने प्यारे आक़ा से हाथ मिलाते हुए हुज़ूर अनवर से बात करने की सौभाग्य पाते। ये सब लोग आज कितने ही ख़ुशनसीब थे कि उन्होंने अपने प्यारे आक़ा के क़ुरब में कुछ क्षण गुज़ारे उनके दिल तसकीन से भर गए और ज़िन्दगी के धारे बदल गए और कभी ना ख़त्म होने वाली दुआओं के खज़ाने लेकर यहां से विदा हुए। मुलाक़ात का सौभाग्य पाने वाले ये नौजवान जब मस्जिद के हाल से बाहर आते तो उनके दिलों की अजीब कैफ़ीयत होती थी। प्राय की आँखें आंसूओं से भरी हुई थीं।

हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात के बाद लोगों के ईमान वर्धक तास्सुरात

रब्वह से आने वाले एक नौजवान ने अपने भावनाओं का इज़हार करते हुए कहा कि आज मैं बहुत ख़ुश हूँ। मेरी ज़िन्दगी की एक ही इच्छा थी कि मेरी प्यारे आक़ा से मुलाक़ात हो और मैं हुज़ूर अनवर के हाथ को चूमूं। आज ख़ुदा तआला ने यह

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

इच्छा पूरी कर दी। मैं अल्लाह तआला का जितना भी शुक्र अदा करूँ कम होगा।

चविंडा से आने वाले एक नौजवान कहने लगे कि मैंने हुज़ूर अनवर के हाथ को छुआ , मेरा हाथ मिलाते हुआ। आज मेरी दिली मुराद पूरी हो गई। मैं आज कितना ख़ुश-क़िस्मत हूँ।

स्यालकोट से आने वाले एक नौजवान ने अपने भावनाओं का इज़हार करते हुए कहा कि आज प्यारे आक़ा से मुलाक़ात मेरी ज़िन्दगी के सबसे अहम लम्हे थे। मैं उसे ज़िंदगी-भर भूल ना पाऊँगा। अत: अगर कोई ज़िन्दगी है तो यही है।

ओकाड़ा से आने वाले एक नौजवान दोस्त कहने लगे कि मैं कितना ख़ुश-क़िस्मत इन्सान हूँ कि मैंने हुज़ूर अनवर से सलाम किया , हुज़ूर अनवर ने मेरा हाथ पकड़ा, मुझे नई ज़िन्दगी मिल गई। मेरे अंदर एक रुहानी कैफ़ीयत पैदा हुई। मैं पहले से बदल चुका हूँ। मैं वर्णन नहीं कर सकता

कुंड यारो सिंध से आने वाले एक साहिब ने वर्णन किया कि मेरा दिल इस वक़्त भावनाओं से भरा हुआ है। मैं बोलने की ताकत नहीं पाता। में कुछ वर्णन नहीं कर सकता। बस इतना कहता हूँ कि मुझे आज एक नई ज़िन्दगी है।

स्यालकोट से आने वाले एक नौजवान ने अपनी भावनाओं का इज़हार करते हुए निवेदन किया कि मेरा दिल सुकून से भर गया है। मुझे नई ज़िन्दगी मिली है। मैं अपने अंदर रूहानियत महसूस करता हूं। आज की मुलाक़ात मेरी ज़िन्दगी का एक चमत्कार है , पाकिस्तान में रहते थे कभी सोचा भी नहीं था कि हुज़ूर अनवर से इस तरह मुलाक़ात होगी। यह मुलाक़ात मेरी ज़िन्दगी का एक ख़ुशगवार तरीन लम्हा है

रब्वह से आनेवाले एक नौजवान कहने लगे कि इस वक़्त बहुत ज़्यादा दिल धड़क रहा है , हाथ काँप रहे हैं, एक कपकपी तारी है। मैं कुछ वर्णन नहीं कर सकता कि मेरी क्या कैफ़ीयत है। बस इतना कहता हूँ कि मैंने अपनी मुराद पा ली और में अपने मक़सद में कामयाब हो गया

स्यालकोट से आने वाले एक दोस्त कहने लगे कि अल्लाह तआला ने मुझ पर ख़ास फ़ज़ल फ़रमाया है कि मेरी हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात हो गई है। मैं कितना ख़ुश-क़िस्मत इन्सान हूँ कि मैंने हुज़ूर को अपने इंतिहाई क़रीब से देख लिया है और मेरा दिल सुकून से भर गया है। हुज़ूर ने मेरा हाथ पकड़े रखा।

रब्वह से आने वाले एक साहिब ने वर्णन किया कि आज मेरी हुज़ूर अनवर से पहली मुलाक़ात थी। मेरा दिल भावनाओं से भरा हुआ है। शब्द मेरा साथ नहीं दे रहे। मैंने हुज़ूर के चेहरा पर इतना नूर देखा है कि मैं शब्द में वर्णन नहीं सकता।

रहीम यार ख़ान से आने वाले एक नौजवान ने अपने भावनाओं का इज़हार करते हुए कहा कि मेरे माता पिता नहीं हैं। आज मेरी ज़िन्दगी को बहुत सुकून मिला है। मुझे आज पता चला है कि हमारी ज़िन्दगी का मक़सद किया है। इन कुछ लम्हों ने मेरी ज़िन्दगी बदल दी है।

रब्वह से आने वाले एक दोस्त ने वर्णन किया कि आज मेरी हुज़ूर अनवर से पहली मुलाक़ात थी। रब्वह में तो हम हुज़ूर अनवर को टीवी पर देखते थे, और दिल में बहुत इच्छा थी कि कभी हमारी भी हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात हो। आज अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से यह इच्छा पूरी कर दी और हुज़ूर अनवर को अपने सामने देखा है। हुज़ूर अनवर से हाथ मिलाया और बात की है।

रावलपिंडी से आने वाले एक नौजवान ने वर्णन किया। मुलाक़ात के बाद मेरे दिल की एक रुहानी कैफ़ीयत है जो मैं शब्द में वर्णन नहीं कर सकता। हम हुज़ूर अनवर को एम टी ए पर देखा करते थे। आज मेरी ज़िन्दगी की इस से बड़ा सौभाग्य क्या होगा कि मैंने हुज़ूर अनवर को इंतिहाई क़रीब से देखा। हुज़ूर अनवर के हाथों को छूआ और चूमा और बातें कीं। आज मेरा जर्मनी आने का मक़सद पूरा हो गया है। ख़ुदा तआला हुज़ूर को लम्बी ज़िन्दगी प्रदान फ़रमाए। हमारा ख़िलाफ़त के साथ हमेशा वफ़ा का सम्बन्ध क़ायम रहे और हमारी औलादें भी हमेशा ख़िलाफ़त के साथ जुड़े रहें और वफ़ा का सम्बन्ध रखें।

रब्वह से सम्बन्ध रखने वाले एक नौजवान कहने लगे कि मेरा दिल अभी तक धड़क रहा है और जिस्म काँप रहा है। बस इतना कहना चाहता हूँ कि मेरे दिल को बहुत सुकून मिला है। मुझे अपनी ज़िन्दगी में सब कुछ मिल गया है।

रब्वह से आने वाले एक साहिब ने अपने भावनाओं का इज़हार करते हुए कहा। मेरी बहुत ख़ुशक़िसमती है मैं इज़हार नहीं कर सकता। में भी एम टी ए पर हुज़ूर अनवर को देखा करता था और उन प्यासी रूहों में शामिल था जो आज भी हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात की मुंतज़िर हैं। आज ख़ुदा तआला ने मुझे यह सौभाग्य प्रदान फ़र्मा दिया कि हुज़ूर अनवर को अपने क़रीब से देखा और हुज़ूर अनवर के हाथों को छूआ और बरकतें प्राप्त कीं। बस इतना कहना चाहता हूँ कि मैंने नूर ही नूर देखा है।

खारीयाँ से आने वाले एक साहिब ने निवेदन किया कि हुज़ूर अनवर के चेहरा पर एक ऐसा नूर है कि मुझ से कुछ बोला ना गया। मैं सोच कर आया था कि ये ये बात करूँगा लेकिन कुछ बोल ना सका और मेरा जिस्म काँपने लग गया और मैं बात ना कर सका।

गुजरात से आने वाले एक नौजवान कहने लगे कि मैंने हुज़ूर अनवर से बात करने की कोशिश की लेकिन मुझ से बोला नहीं गया। मेरा दिल धड़क रहा था। हुज़ूर अनवर ने ख़ुद ही मुझ से बात की और मेरे केस के बारे में पूछा। उस वक़्त भी मेरे जिस्म पर कपकपी तारी है

रब्वह से आने वाले एक नौजवान कहने लगे कि मेरा दिल धड़क रहा है , मेरा जिस्म काँप रहा है। हुज़ूर अनवर के चेहरा पर इतना नूर था कि मैं देख नहीं सका। मुझ से बोला नहीं जा रहा। महोदय की आँखें आँसूओं से भरी थीं।

खारीयाँ (गुजरात) से आने वाले एक नौजवान कहने लगे कि आज हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात के बाद में अपने आपको दुनिया का ख़ुश-क़िस्मत इन्सान समझता हूँ। हुज़ूर को अल्लाह तआला लम्बी ज़िन्दगी प्रदान फ़रमाए और ख़िलाफ़त का साया हमेशा हम पर रखे।

सांगला हिल से आनेवाले एक नौजवान ने अपनी भावनाओं को वर्णन करते हुए कहा कि आज में अपनी ख़ुशी की हालत शब्द में वर्णन करने की सकत नहीं पाता। जैसे किसी इन्सान को इस की इंतिहाई क़ीमती ग़मी हुई चीज़ मिल जाये तो इस की जो हालत होती है इस से कहीं ज़्यादा आज मेरी हालत है। हम अपने आक़ा के दर्शन को तरसे हुए थे आज वो दर्शन हो गया। ऐसे लग रहा है कि आज मुझे एक बहुत बड़ी नेअमत मिल गई है। इस मुलाक़ात को मैं ज़िंदगी-भर याद रखूँगा

शेख़ूपूरा से आने वाले एक दोस्त ने वर्णन किया कि ख़ुदा तआला का लाख लाख शुक्र है कि आज मुलाक़ात का अवसर प्रदान हवा में बहुत ख़ुश-क़िस्मत हूँ। मुझे ये मुलाक़ात ज़िंदगी-भर याद रहेगी और हमेशा मेरी ज़िन्दगी का हिस्सा रहेगी।

रब्वह से आने वाले एक नौजवान ने अपनी भावनाओं को का इज़हार करते हुए कहा कि मेरा यहां हाल से बाहर जाने को दिल नहीं कर रहा। मैं चाहता हूँ कि एक कोने में खड़ा हो कर हुज़ूर को देखता रहूं। मेरा दिल धड़क रहा है , हाथ काँप रहे हैं। उन पर एक कपकपी तारी थी और आँखों में आंसु थे।

रब्वह से आने वाले एक नौजवान ने वर्णन किया कि इस वक़्त मीरा दिल अन्दक से रो रहा है। मेरे माता पिता फ़ौत हो चुके हैं। आज मैंने इन दोनों के लिए दुआ की दरख़ास्त की है। मुझे आज बहुत सुकून मिला है। आज का दिन मेरी ज़िन्दगी का एक अहम है।

गुजरांवाला से आने वाले एक नौजवान ने वर्णन किया कि मेरी ज़िन्दगी की सारी इच्छाएं आज ही पूरी हो गई हैं। अब मेरी ज़िन्दगी की कोई इच्छा नहीं रही। ज़िन्दगी में ऐसा अवसर पता नहीं कब दुबारा मिलता है। मैं बहुत ख़ुश-क़िस्मत इन्सान हूँ। ख़ुदा के ख़लीफ़ा के हाथों को छूआ है।

रब्वह से आने वाले एक नौजवान कहने लगे कि मैं दुआ किया करता था कि कभी मेरी ज़िन्दगी में मेरी हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात हो। मुझे भी आक़ा के दर्शन की घड़ी नसीब हो। आज मैं बहुत ख़ुशनसीब इन्सान हूँ कि मेरी दुआ क़बूल हो गई है

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

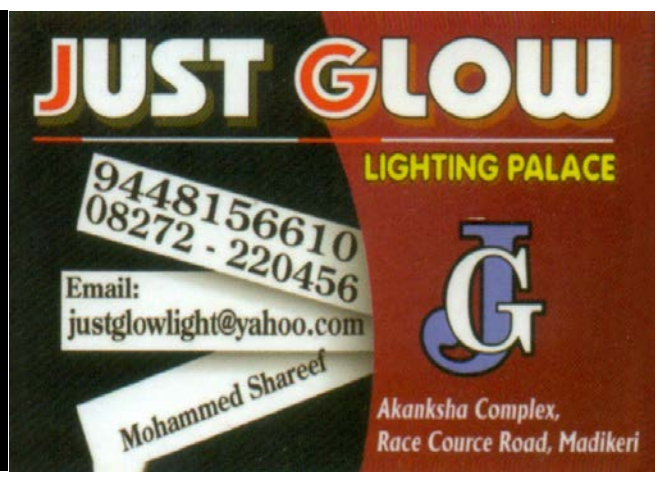

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 6 February 2020 Issue No. 6

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

और आज मुझे हुज़ूर अनवर के दर्शन की घड़ी नसीब हो गई है। मैंने अपना हाथ हुज़ूर अनवर के हाथों में दिया और हुज़ूर अनवर से दुआ के लिए कहा।

प्राय नौजवानों ने इस बात का इज़्हार किया कि हमें आज इस क़दर दिली सुकून , सन्तोष और ख़ुशी है कि हमारे पास वर्णन करने के लिए शब्द नहीं हैं। हम ने आज वह कुछ देखा है और वह पाया है जिसके बारे में पहले कभी सोचा भी न था। आज मुलाक़ात करने वाले सभी लोगों और नौजवानों ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने की सौभाग्य भी पाया। मुलाक़ात का यह प्रोग्राम 6 बजकर 32 मिनट तक जारी रहा।

फ़ैमिली मुलाक़ातें

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले आए जहां प्रोग्राम के अनुसार फ़ैमिलीज़ मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज शाम के इस में 29 फ़ैमिलीज़ के 118 मर्दों और इस के इलावा 40 लोगों ने व्यक्तिगत तौर पर मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया। मुलाक़ात करने वाली फ़ैमिलीज़ जर्मनी की विभिन्न 70 जमाअतों से आई थीं

उनमें से कुछ तो बड़े लंबे सफ़र तय कर के हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात के लिए पहुंची थीं। कासिल ,कोलिन, डोर्टमुंड से वाले लगभग 200 किलोमीटर Dusseldorf और Bonn से आने वाले लगभग 230 किलो मीटर ,Reutlingen से आने वाले 250 किलो मीटर और बोख़ालिट के इलाक़ा से आने वाली फ़ैमिलीज़ 300 किलोमीटर का सफ़र तय कर के अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात के लिए पहुंची थीं

इसके इलावा आज मुलाक़ात करने वालों में पाकिस्तान, घाना, बोरकीना फासो, स्विटज़रलैंड, तनज़ानिया, सऊदी अरब , बेनिन, सेनेगाल, लाइबेरिया, आस्ट्रेलिया, कांगो, माली , नाईजर , सेरालियून , गेम्बिया , यूनान और फिनलैंड सयाने वाले लोगों और फ़ैमलीज़ ने भी अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात का सौभाग्य पाया।

मुलाक़ात करने वाले इन सभी लोगों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाएं। मुलाक़ातों का ये प्रोग्राम शाम साढ़े आठ बजे तक जारी रहा इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

आमीन का आयोजन

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार 9 बजकर 25 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के मर्दाना हाल में पधारे और आमीन का आयोजन का आरम्भ हुआ। निम्नलिखित 38 ख़ुशनसीब बच्चों और बच्चियों से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने क़ुरआन करीम की एक एक आयत सुनी और आख़िर पर दुआ करवाई।

प्रिय फ़ूज़ान अख़तर, तलाल अहमद, हसीब मलिक, शायान अहमद काहलों, जाज़िब अहमद, नायाब अहमद ताहिर, शुऐब अहमद ख़ान, नूरुद्दीन चुग़ताई , आयान अहमद, हसीब अहमद, राना मसरूर अहमद महमूद, फ़ारस अहमद, फ़ारान अहमद मुस्तफ़ा, तहरीम प्रदान, फ़हीम अहमद, तौहीद अहमद, कृष्ण अहमद, दरमान अहमद मुबारक, लुक़्मान महमूद, शायान हफ़ीज़, नवीद अहमद निसार, मुसव्विर अहमद

प्रिया अलीशा मलिक, ख़ूबाँ क़मर, अलीना रूप रफ़ी, इनोश अतीक़ कायना इमतियाज़, मारिया तारिक़, अर्ज लैला मुबारक, लुबैना सोसन अहमद, हानिया अफ़ज़ा शहरोज़, हिबतुश्शाफी मुबारक, आफ़ीया आसिम, सबिया अंजुम पाल, हुरीया कायनात काशिफ़, अरूसा अहमद, फ़रीदा तनवीर, प्रिया आबिदा बिलाल

आमीन के आयोजन के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाऐं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

04 जुलाई 2019 ई (दिनांक जुमेरात)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 4 बजकर 15 मिनट पर तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक, ख़ुतूत और रिपोर्टस मुलाहिज़ा फ़रमाएं और हिदायतों से नवाज़ा। हुज़ूर अनवर की विभिन्न दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्तता रही। दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर नमाज़ ज़ुहर तथा प्रभाव जमा कर के पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

जलसा कार्ल्सरोए के लिए रवाना होना

आज प्रोग्राम के अनुसार जलसा गाह कार्ल्सरोए के लिए रवाना होना था। 5 बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह से बाहर पधारे और दुआ करवाई और यहां से Karlsruhe के लिए रवाना हुए।

बैयतुस्सबूह फ्रैंकफ़र्ट से Karlsruhe की दूरी 160 किलो मीटर है। यह जगह जहां जलसा का आयोजन होता है K-Messe कहलाती है। इसका कुल क्षेत्रफल एक लाख पच्चास हज़ार वर्ग मीटर है और उसका Covered हिस्सा 70 हज़ार वर्ग मीटर है। इस में चार बड़े हाल हैं और ये चारों हाल एयर कंडीशन्ज़ हैं। हर हाल का क्षेत्रफल 1250 वर्ग मीटर है और हर हाल में कुर्सीयों पर बारह हज़ार लोग बैठ सकते हैं और हर हाल में अठारह हज़ार से अधिक लोग नमाज़ अदा कर सकते हैं। इन चारों हालों से जुड़ा हुआ सामूहिक तौर पर 128 बाथरूम हैं और बहुत से छोटे हाल और कमरे भी हैं। यहां दस हज़ार गाड़ियों की पार्किंग की जगह मौजूद है।

लगभग 1 घंटा 55 मिनट के सफ़र के बाद 7 बजकर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ जलसा गाह पधारे। जैसे हुज़ूर अनवर गाड़ी से बाहर पधारे तो अफ़्सर जलसा सालाना मुहम्मद इलयास मजोका साहिब और अफ़्सर जलसा गाह हाफ़िज़ मुज़फ़्फ़र इमरान साहिब ने हुज़ूर अनवर को ख़ुश-आमदीद कहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर कुछ देर के लिए अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ गए।

(शेष.....)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad